(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 9, मार्च, 2016,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

परमपिता परमात्मा शिव की महिमा के केन्द्र –
भारत के 12 ज्योतिर्लिंगम् मठ

1. धनगढ़ी (नेपाल)- अनन्त विभूषित जगतगुरु शंकराचार्य ओमकारानन्द सरस्वती जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.हीरा बहन। **2. बीकानेर-** राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कल्याण सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कमल बहन। **3. शान्तिवन-** राजयोगिनीदादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में अपने विचार व्यक्त करते हुए केन्द्रीय स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री भ्राता जगत प्रकाश नड्डा। **4. शान्तिवन-**राजयोगिनीदादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में अपने विचार व्यक्त करते हुए जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री भ्राता फारुख अब्दुल्लाह। **5. लखनऊ (त्रिपाठी नगर)-** किसानों के लिए पारदर्शी किसान सेवा प्रोजेक्ट क्रियान्वित करने हेतु ब्र.कु.बद्री विशाल भाई को सम्मानित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता अखिलेश यादव तथा प्रदेश के अन्य मंत्रीगण। **6. बीकानेर-** राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधरा राजे सिंधिया से ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु.कमल बहन। **7. शान्तिवन-** राजयोगिनीदादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में अपने विचार व्यक्त करते हुए भास्कर न्यूज ग्रुप के अध्यक्ष भ्राता रमेश चन्द्र अग्रवाल। **8. बूंदी-** प्रभु प्राप्ति भवन की शिलान्यास पट्टिका का अनावरण करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु.भ्राता रमेश शाह, विधायक भ्राता अशोक डोगरा, नगर परिषद् सभापति भ्राता महावीर मोदी, ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.रजनी बहन, ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.मीना बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से

शिवरात्रि ही शुभरात्रि है

आध्यात्मिक रहस्यों से परिपूर्ण आयोजन, पर्व का रूप धारण कर संस्कृति का संरक्षक बन जाता है। अतीत के कुछ अनमोल क्षण, जिनमें हम साधारण से असाधारण हुए थे, उनके स्मृति दिवस हैं ये पर्व। आज भी पर्व आते और जाते हैं किन्तु कुछ विशेष घटित नहीं होता। भौतिकता ज्यों की त्यों बनी रहती है, कटुता बढ़ती जाती है। फिर क्यों हमें इन पर्वों से मोह है? जीवन के मूल्य बदल रहे हैं, इन निर्जीव पर्वों को हम छोड़ क्यों नहीं देते? लेकिन नहीं। ये वो चाबियाँ हैं जिनसे कभी द्वार खुले थे लेकिन आज द्वार लुप्त हो गये हैं, हमारे हाथ में केवल ये चाबियाँ रह गई हैं जो निरर्थक प्रतीत होती हैं। किन्तु इस आशा पर कि फिर कभी पट खुलेंगे, हम इन्हें सहेजते चले आ रहे हैं।

शिव से अलग अब रात्रि ही रह गई है

'शिवरात्रि' एक ऐसा पर्व है जोकि सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी आज इसकी सर्वश्रेष्ठता, इसकी पावनता लुप्त हो गई है क्योंकि केवल 'रात्रि' रह गई, 'शिव' विस्मृत हो गया। 'रात्रि' का गहन तम मानव को शिव से अशिव की ओर ले चला। शुभ-रात्रि (Good Night) कहने की प्रथा तो प्रचलित हुई किन्तु 'शिव' से दूर 'शुभ' कहाँ? शुभ-रात्रि, विष-रात्रि और काल-रात्रि में बदल गई। सतयुग और त्रेतायुग का सुखमय दिवस ढल गया, द्वापर की भक्तिमय संध्या भी चली गई। शेष है कलियुग की घटाटोप अन्धकारमयी रात्रि का विस्तृत साम्राज्य, जहाँ अज्ञान अधिष्ठाता है, अधर्म ही कार्य और कारण है और है दुख, अशान्ति का निर्मम अट्टहास।

शिव छोड़ विष की ओर

रात्रि बीत रही है। अधिकतर की रात विषय-वासनाओं में डूबी विष-रात्रि हुई जा रही है। नर-नारी, युवा-वृद्ध आदि सभी धर्म, कर्म, शर्म और मर्यादायें भूल काम-वासना के गर्त में डूब रहे हैं। सम्पूर्ण कार्य व्यापार का आधार आज काम-विष है। कहाँ शिव-स्मृति से सुकर्मों की सृष्टि और कहाँ विषपूर्ण स्मृति से प्रत्येक कर्म, कुकर्म का भयावह रूप धारण कर रहा है। संकल्पों में अशुभ चिन्तन एवं चिन्ता का विष घुला है। नेत्रों में कुदृष्टि और दोष-दृष्टि की भयानक छाया है। मुख से कटु वचनों की विषाक्त दुर्गन्ध उठ रही है। कानों में निन्दा का विष घुल रहा है। पेट में तामसिक भोजन रूपी विष अपना प्रभाव प्रत्यक्ष कर रहा है। हाथ कुकृत्यों के कालकूट से सने हैं।

अमृत सूची

- वृत्ति द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन *(सम्पादकीय)* 5
- होली आई... *(कविता)* 6
- मैं होली कैसे मनाता हूँ?.........7
- परीक्षा में बाबा की मदद 8
- दैवी संविधान -पूर्व भूमिका 9
- दादी जानकी के जन्मशताब्दी ..12
- चेत प्राणी चेत 14
- ठीक होने का विश्वास बनाए.... 15
- सशक्तिकरण महिला का 18
- श्रद्धांजलि......................20
- सचित्र सेवा समाचार 21
- राजयोग से संबंध बन गये 22
- आप जीओ हजारों साल 23
- सचित्र सेवा समाचार 24
- मुझे ईश्वर जैसा सच्चा.........26
- मानव जीवन में धन 29
- बाबा से मिले तीन प्रश्नों के 31
- शिव जयन्ती... *(कविता)* 32
- पवित्रता ही सुख................33
- 'पत्र' संपादक के नाम 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

प्रकृति और पुरुष से बने सम्पूर्ण विश्व से विषाक्त धुआँ उठ रहा है। प्रत्येक जीव सर्प-सर्पणी की भांति एक-दूसरे को डस रहा है।

शिव-स्मृति से रहित मानव, शव मात्र

शिव से विमुख आज हर प्राणी 'शव' बनकर रह गया है। प्रत्येक संकल्प, वचन एवं कर्म 'शव-स्मृति' में अर्थात् 'मैं शरीर हूँ' इसी देह अभिमान से अभिभूत हो रहा है। यूँ लगता है कि सम्पूर्ण जगत में भूतों का वास हो रहा है क्योंकि प्रत्येक मानव स्वयं को 'पंच भूतों' से निर्मित 'शरीर' मात्र ही अनुभव कर रहा है। दुख-हर्त्ता, सुख-कर्त्ता शिव से विमुख आज अधिकतर की रात्रि व्याधियों से परिपूर्ण है। भोग का पुत्र रोग उन्हें सता रहा है। दैविक, दैहिक एवं भौतिक तापों से परिपूर्ण रात्रि हाहाकार में बीत रही है। कर्मगति का ज्ञान न होने के कारण हीरे-जैसा जीवन शोक से भरा, व्यर्थ जा रहा है। हर तरफ घनघोर अन्धेरा, कहीं नहीं कोई, जो दुखियों के दुख मिटाये, धीरज बँधाए।

भटकन और खोज में भक्त की रात्रि

इसी रात्रि की एक दूसरी झलक भी है जहाँ भक्त की भटकना, तड़प और उलझन है, खोज है। देवताओं, गुरुओं और इष्ट रूपों की भरमार में, वह परम प्यारे परमपिता परमात्मा शिव से अनभिज्ञ, कभी शिव पिण्डी पर जल चढ़ा रहा है तो कभी जटाधारी, सूक्ष्म शरीरधारी आकारी देवता शंकर को पुकार रहा है। दीप जल रहा है किन्तु हृदय मन्दिर में अज्ञान का अन्धेरा है। व्रत तो रखा है किन्तु चित्त दूषित वृत्तियों से आवृत्त है। काल रूपी चूहा उसके नैवेद्य को खा रहा है किन्तु वह अभागा अनभिज्ञ अज्ञान तन्द्रा में ऊँघ रहा है। अशिव और शिव, असत्य और सत्य, असुन्दर और सुन्दर में भेद करना आज उसके लिए कठिन हो रहा है। वेद, उपनिषद्, पुराण, कथा-कीर्तन सब साधन एक रस्म प्रतीत हो रहे हैं। घंटे की ध्वनि में शिवालय में बैठा भक्त सच्चे शिव से दूर, शिव-स्मृति को भूल, नयनहीन बन, सीमा-हीन अन्धकार में ठोकरें खा रहा है।

राजयोगी की रात्रि

लेकिन दूर एक दीप जल रहा है....। अन्धकार के विशाल साम्राज्य को चुनौती देता हुआ प्रतीत हो रहा है। रूपहले प्रकाश की अलौकिक आभा में एक मुखमण्डल दीप्त हो रहा है। स्वयं को शुद्ध आत्मा निश्चय कर, नैनों में स्नेह-स्मृति, मन में सम्बन्ध-स्मृति, बुद्धि में ज्ञान-आवृत्ति और संस्कारों में विकारों से निवृत्ति को लिए राजयोगी अपने परमपिता परमात्मा शिव से मंगल मिलन मना रहा है। क्या उसके पास विष नहीं था? क्यों नहीं किन्तु उसने सारा 'विष', 'शिव' को अर्पित कर दिया।

अब शिव अपना कर्त्तव्य दुहरा रहे हैं

ज्ञान की गंगा शिव से प्रवाहित हो पतित को पावन बना रही है। रूहानी याद की यात्रा का राही अमरनाथ की पावन यात्रा कर रहा है। अमरनाथ बाबा उसे अमरकथा सुना अमरलोक का स्वामी बना रहे हैं। कालों का काल सदाशिव उसे अकालतख्त पर स्थित कर अकालमूर्त्त बना रहे हैं। राजयोगी, अपने अन्तर्मन का सम्पूर्ण कड़वापन 'अक्' और झूठे दैहिक रूप का नशा 'धतूरा' शिव को अर्पित कर रहा है। सोमनाथ शिव उसे ज्ञान रूपी सोमरस का पान करा रहे हैं जिसे पीकर वह नारायणी नशे में झूम उठा है। शिव इस सच्चे व्रती एवं साधक को विषैले विकारों रूपी सर्पों से बचा उसे दिव्य गुणों की भभूति से सजा रहे हैं। शिव गोपेश्वर उसे ज्ञान के गोपनीय रहस्य स्पष्ट कर

(शेष..पृष्ठ 28 पर)

सम्पादकीय ..

वृत्ति द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन

मानव-मन की अनेक वृत्तियाँ होती हैं जैसे दानवृत्ति, भिक्षावृत्ति, खेलवृत्ति आदि-आदि। मोटे अर्थ में वृत्ति का अर्थ है विचार और भावना। जैसे कल्याण की वृत्ति का अर्थ है कल्याण की भावना या कल्याण के विचार। वृत्ति ही कालान्तर में कृति में बदल जाती है इसलिए कहा जाता है, 'जैसी वृत्ति वैसी कृति।' वृत्ति सूक्ष्म है और कृति प्रत्यक्ष है। किसी भी श्रेष्ठ कृति के लिए दीर्घकाल की श्रेष्ठ वृत्ति की आवश्यकता है। जैसे एवरेस्ट पर झण्डा फहराने वालों का वह कर्म तो बाद में संसार के सामने आया, इससे पहले दीर्घकाल से उनकी वृत्ति में था कि झण्डा फहराना है, फहराना है, फहराना है। दृढ़ वृत्ति कालान्तर में कर्म में परिवर्तित हो जाती है।

साथ जाएँगे विचार

विचार मानव आत्मा की अनादि शक्ति है, विचार सदा उसके साथ रहते हैं। जन्म-पुनर्जन्म के खेल में एक शरीर छूटकर दूसरा शरीर, एक घर छूटकर दूसरा घर और पुराने सम्बन्धी छूटकर नए मिलते हैं, धन-दौलत पदार्थ सब बदलते रहते हैं परन्तु जन्म-पुनर्जन्म के कारण विचार भी बदल जाएँ, ऐसा नहीं होता है। आत्मा उन्हीं विचारों को साथ लिए-लिए नए शरीर में प्रवेश कर जाती है। यदि हम एकान्त में बैठकर अपने से सवाल पूछें कि मेरा सच्चा साथी कौन? तो भीतर से यही उत्तर आएगा कि मेरे विचार और उनसे बने संस्कार ही मेरे सच्चे साथी हैं जो इस शरीर को लेने से पहले भी मेरे साथ थे, अब भी साथ हैं, शरीर छोड़ने के बाद भी साथ रहेंगे। शरीर छोड़कर जाने की बात को छोड़िए, यदि अभी-अभी विदेश में जाना पड़ जाए, अन्य शहर में जाना पड़ जाए तो हम अपनी उपार्जित चीज़ों में से क्या-क्या साथ ले सकेंगे, शायद एक प्रतिशत भी नहीं परन्तु विचार 100 प्रतिशत हमारे साथ चलेंगे।

संग से बदलता है स्वरूप

संग का रंग लगता है और रंग लगने से स्वरूप बदल जाता है। जैसे लोहे का रंग काला होता है पर अग्नि के सम्पर्क में आते ही उसका काला रंग लुप्त हो जाता है, चमकदार लाल रूप बन जाता है और अग्नि के समान गर्मी को वातावरण में फैलाने लगता है। परमात्मा पिता भी सर्व गुणों की चमक से चमकते हुए सूर्य हैं। कोई भी आत्मा जब उनके नज़दीक जाती है तो उसका रूप भी निखर जाता है और वह गुणों का रंग अपने में लगाकर वायुमण्डल में गुणों को बिखेरने लगती है। गुणों से भरपूर आत्मा सबके प्रति शान्ति बिखेरती है, प्रेम बिखेरती है, पवित्रता बिखेरती है... इसी को कहते हैं, सबको शुभभावना, शुभकामना का योगदान देना, अपनी शुभ वृत्ति से अशुभ वृत्तियों को बदलना।

वृत्ति रखनी है एक में और बेहद में

जो चीज़ जितनी ऊँची और बेहद होती है, उतना ही बेहद को लाभ पहुँचाती है। हमारे कमरे की ट्यूब लाइट केवल हमें प्रकाश देती है, दूसरे को नहीं क्योंकि उसके प्रकाश और ऊँचाई की हद है परन्तु सूर्य बहुत ऊँचा भी है और बेहद की रोशनी वाला भी है इसलिए इतना दूर होते भी गन्दगी के कीटाणुओं को भस्म करता है, वस्तुओं का रूप बदल देता है, भूमण्डल को प्रकाशित कर देता है, इसी प्रकार परमात्मा पिता भी ज्ञान सूर्य हैं, बहुत दूर हैं, बहुत ऊँचे हैं, बेहद में हैं। उनमें भी विकर्मों का नाश करने की, संस्कारों को सुधारने की, वायुमण्डल को बदलने की, अज्ञान अन्धकार मिटाने की और आत्माओं को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों की जानकारी पाकर अब हमें पहले इन्हें अपने में भरना है और फिर विश्व की आत्माओं को देना है। परमात्मा पिता समान शक्तियाँ अपने में भरने के लिए अपनी वृत्ति भी हद से बेहद

में ले जानी है। किसी एक आत्मा में नहीं, किसी देहधारी इष्टदेव में नहीं, किसी दैहिक सम्बन्ध में नहीं, अपनी वृत्ति उस ऊँचे से ऊँचे पिता में, टावर ऑफ साइलेंस में रखनी है। एक में वृत्ति रहने से वह शक्तिशाली बन जाती है। दूसरे शब्दों में परमात्मा पिता के समान बन जाती है और उसमें भी परमात्मा पिता के समान बुराइयों को नष्ट करने की शक्ति आ जाती है।

सब तक पहुँच सकता है शुभ संकल्पों का भाषण

सारी सृष्टि तक वाणी द्वारा तो नहीं पर वृत्ति द्वारा अवश्य पहुँचा जा सकता है। जैसे हवा में जब नमी होती है तो भले ही दिखाई नहीं देती पर जहाँ से भी गुज़रती है, वस्तुओं पर अपनी नमी का प्रभाव अवश्य छोड़ती है, इसी प्रकार एक स्थान पर रहते हम सारे भूमण्डल पर अपनी शुभभावनाओं, कल्याण की कामनाओं का प्रभाव छोड़ सकते हैं, वाणी का ना सही, शुभ संकल्पों का भाषण सब तक अवश्य पहुँचा सकते हैं। हम सबको पिता परमात्मा की तरफ से कार्य मिला है कि हम अपनी वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को बदलें अर्थात् अपनी श्रेष्ठ विचारधारा के द्वारा विश्व में फैली प्रदूषित विचारधाराओं को सही दिशा दें। इसके लिए हमें अपनी वृत्ति को सदा सकारात्मक और शक्तिशाली बनाकर रखना है। हमारी शक्तिशाली वृत्ति ही हमारे आश्रितों को शक्तिशाली बनाएगी।

शिव भगवानुवाच, 'अगर श्रेष्ठ वृत्ति है तो यथार्थ विधि भी है और यथार्थ विधि है तो सिद्धि श्रेष्ठ है ही है। तो विधि और सिद्धि का बीज 'वृत्ति' है। श्रेष्ठ वृत्ति सदा भाई-भाई की आत्मिक वृत्ति हो। यह तो मुख्य बात है ही लेकिन साथ-साथ सम्पर्क में आते हर आत्मा के प्रति कल्याण की, स्नेह की, सहयोग की, निःस्वार्थपन की, निर्विकल्प वृत्ति हो, निरव्यर्थ-संकल्प वृत्ति हो। जैसे आप लोग इस दुनिया में आँखों की नज़र के चश्मे का दृष्टान्त देते हैं, जिस रंग का चश्मा पहनेंगे वही दिखाई देगा, ऐसे यह जैसी वृत्ति होती है, तो वृत्ति दृष्टि को बदलती है, दृष्टि सृष्टि को बदलती है।'

भारत के प्रधानमंत्री, भारत की 125 करोड़ जनता तक अपने मन की बातें पहुँचा रहे हैं। वे मन के संकल्प, मुख द्वारा लोगों तक पहुँचाते हैं। इसके लिए माध्यम हैं साइन्स के साधन। हम टावर आफ साइलेंस के साथ अपनी वृत्ति को रिले करके विश्व तक मन की बातें पहुँचा सकते हैं और विश्व भर के वायुमण्डल को सकारात्मक और शक्तिशाली बना सकते हैं।

– ब्र.कु आत्म प्रकाश

होली आई, होली आई

ब्र.कु.नीरज, सारंगपुर (म.प्र.)

होली आई, होली आई, कर लो प्यारे ज्ञान कमाई
दुख, अशांति और कलेश में क्यों है तूने उम्र बिताई,
आत्म भाव को विस्मृत करके, क्यों जीवन में आग लगाई।
होली आई, होली आई.............

अपने जीवन को आओ, परमात्म रंगों से भर लें,
शिव की ज्ञान बौछारों से खुद को तर कर लें।
शिव बाबा ने जब डारी, एक अनोखी ज्ञान पिचकारी,
भूल गये सब वैर-विरोध को, हम तो जीते, माया हारी।
प्रेम के मीठे बोल मिठाई, हमने सबको खूब खिलाई,
विकर्म और दुर्गुणों की होली, हमने देखो खूब जलाई।
होली आई, होली आई.............

पतित से पावन बनाने आया, दैवी गुणों से खूब सजाया,
परमपिता की याद का हमने, रंग-गुलाल सबको है लगाया।
ज्ञान उजाला हो गया है, शिव शक्ति की आभा छाई,
उठो-उठो अब सोने वालो, अज्ञान अंधेरे को दो विदाई।
एक पिता के हम सब बच्चे, हम आपस में भाई-भाई,
निरहंकारी बन बांटते जाना, प्रभु प्रेम की रबड़ी-मलाई।
होली आई, होली आई.............

होली पर्व पर विशेष ...

मैं होली कैसे मनाता हूँ?

द्वापरयुग में भक्ति का प्रारम्भ होते ही ईश्वरीय कर्त्तव्यों के यादगार-स्वरूप अनेक त्योहार मनाए जाने लगे। होली भी उनमें से एक मुख्य त्योहार है जो तन, मन से प्रभु का हो जाने की प्रेरणा देता है। आइये जानें, होली के मनाने का रूहानी ढंग –

विघ्नों को अनदेखा कर बढ़े चलो

होली के सम्बन्ध में प्रह्लाद की बुआ होलिका की जो कहानी है अथवा प्रह्लाद पर अत्याचारों का जो प्रसंग है, उससे मैं यह शिक्षा लेता हूँ कि सत्य की सदा जीत ही हुआ करती है। पिता परमात्मा की याद में रहने वाले प्रह्लाद रूपी बच्चों पर अत्याचार भी होते हैं और धर्मपरायण आत्माओं के मार्ग में विघ्न भी आते हैं परन्तु परमात्मा का संग-सहारा न छोड़ने वाले की रक्षा भी परमात्मा द्वारा होती अवश्य है और अंत में मनुष्यात्मा परमात्मा के योग (मिलाप) की प्राप्ति कर लेती है। अत: होली का उत्सव मुझे प्रोत्साहित करता है कि मैं विघ्नों को अनदेखा कर प्रभुपथ पर बढ़ता चलूँ।

ज्ञान-गुलाल से होली खेलो

होली के दिन एक-दूसरे पर सूखा रंग डाल कर गले मिलते हैं। इस मिलन को 'मंगल-मिलन' कहा जाता है। परन्तु मैं देखता हूँ कि होली खेलने वाले लोग इस प्रथा की आड़ में एक-दूसरे को जूतों का हार पहनाते तथा हृदय में ईर्ष्या-द्वेष होने के कारण अनेक प्रकार से बदले लेते हैं। मिलन इसलिए होता है कि मिलने वाले अपने पुराने भेद-भावों को भूलकर, अब मिलकर एक-दूसरे के मंगल (कल्याण) की सोचेंगे किंतु पुराने मन में युक्तियुक्त रीति से परिवर्तन न हुआ होने के कारण इस मिलन का कोई विशेष महत्व नहीं रह जाता। इससे शिक्षा लेकर मैं ज्ञान-गुलाल से होली खेलता हूँ। मैं स्वयं भी ज्ञान-केसरिया लगवाता हूँ

और दूसरों को भी लगाता हूँ क्योंकि ज्ञान से मनुष्यों के मन में शुद्धि आ जाती है। ज्ञान द्वारा प्रभु-मिलन ही आत्मा के लिए मंगल-मिलन है। इससे सब द्वेष-भाव सदा के लिए मिट जाते हैं।

परिचित-अपरिचित को ज्ञान-रंग लगाते चलो

होली के दिनों में मित्रों, सम्बन्धियों इत्यादि को घर से बाहर खींच कर अथवा उनके घर घुस कर भी उनको रंगा जाता है। पथिकों को भी रंग डाला जाता है। जो रंग नहीं लगवाता उसे 'होलियों का चेढ़वा' कहकर चिढ़ाया जाता है और किसी भी रीति उस पर रंग डालने की कोशिश की जाती है। मैं भी इसी प्रयत्न में रहता हूँ कि परिचित अथवा अपरिचित व्यक्ति को ज्ञान-रंग से कैसे रंगा जाए क्योंकि अतीन्द्रिय सुख तो ऐसी होली से ही मिलता है। गीता के भगवान ने गोप-गोपियों से होली इसी रीति मनाई थी।

खुशी भी स्थिर और रंग भी पक्का

होली का उत्सव वसन्त ऋतु में आता है। इस दिन पगड़ी को गुलाबी अथवा केसरिया रंग कर लोग खुशियाँ और

रंग-रलियाँ मनाते हैं, वे नाचते-खेलते हैं परन्तु मैं अपनी बुद्धि अथवा आत्मा को ज्ञान-केसरिया का रंग देकर आनन्द निमग्न होता हूँ। गोपियों ने भी आध्यात्मिक रास रचाई थी। ज्ञान से प्रफुल्लित अथवा लब्धकाम होकर आत्मा मानो हर्षित हो नाचती है। मैं तो ऐसी होली मनाता हूँ जिससे पक्का रंग भी रहे और खुशी भी स्थिर रहे, वस्त्र भी व्यर्थ न जाएँ और रंग पर पैसे भी खर्च न हों।

होली और होलिका-दहन

'ज्ञान' को जैसे 'अमृत' कहा गया है, वैसे ही ज्ञान को 'अंजन' भी कहा गया है, काम-क्रोधादि विकार रूपी रोगों को हरने वाली 'परम-औषधि' भी और आत्मा को प्रभु की मस्ती में रंगने वाला 'रंग' भी कहा गया है। जैसे संग के प्रभाव को 'संग का रंग' कहा गया है, उसी प्रकार आत्मा पर ज्ञान का जो प्रभाव पड़ता है, उसे मुहावरे में 'ज्ञान का रंग चढ़ना' कहा गया है। अत: परमात्मा शिव द्वारा संगमयुग में जो ज्ञान मिला, उसी की याद में वास्तव में होली का त्योहार आज स्थूल रंगों से मनाया जाता है क्योंकि आज नर-नारियों के पास ज्ञान-रंग तो है नहीं। परमात्मा शिव तो ज्ञान-रंग द्वारा आत्माओं को रंगते हैं परन्तु आज बाह्यमुखी लोग स्थूल रंग द्वारा दूसरों के कपड़े अथवा चेहरे बिगाड़ देते हैं।

होली के अवसर पर उपलों में धागे डाल कर होलिका जलाने की जो प्रथा है, वह भी इसी रहस्य का परिचय देती है कि यह शरीर उपलों की तरह विनाशी है, यह एक दिन जल कर राख हो जाने वाला है परन्तु आत्मा अविनाशी है, उसे अग्नि नहीं जला सकती। ❖

परीक्षा में बाबा की मदद

ब्रह्माकुमारी शलाका महल्ले, अकोला (महाराष्ट्र)

मैं और मेरा सारा परिवार 2008 से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे हैं। घर से सेवाकेन्द्र बहुत ही नजदीक है इसलिए हर पल निमित्त बहन की छत्रछाया बनी रहती है। बाबा का बनने के बाद जो भी दिन निकलता है वह पूरे परिवार के लिए खुशियों का निकलता है। बाबा के महावाक्य अर्थात् मुरली सुनना, सेवाकेन्द्र पर जाकर सेवा करना, यह नित्य नियम बन गया है। पढ़ाई में पूरी एकाग्रता से मन लगने लगा है। लौकिक पिताजी की ज्यादा आमदनी न होते हुए भी हम अपने को बहुत खुशहाल और बहुत धनवान अनुभव करते हैं।

जब मेरी 10वीं क्लास की परीक्षा आई तो थोड़ी चिंता तो थी लेकिन माता-पिता बार-बार बाबा को याद करने के लिए कहते थे, मुरली क्लास के लिए सुबह उठाते थे। मेरे सभी पेपर बाबा की याद से अच्छे हुए परन्तु साइन्स का पेपर आया तो मेरी चिन्ता बढ़ गई। मुझे बाबा के महावाक्य याद आने लगे, 'बच्ची, मैं तुम्हारा बाप, टीचर, सतगुरु हूँ' और बाबा का वह स्लोगन याद आया, 'बच्ची, तुम चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ।' जब परीक्षा हॉल में बैठी तो ऊपर से प्रकाश की किरणें आ रही थीं, मुझे अनुभव हो रहा था कि बाबा मुझे शक्ति दे रहे हैं। बाबा की बहुत मदद मिली। जब रिजल्ट आया तो बाबा ने मुझे 90 प्रतिशत मार्क्स से पास करवाया और जिस पेपर का मुझे डर था उस में मुझे 84 प्रतिशत मार्क्स मिले। कमाल है बाबा की! मुश्किल का हल बाबा ने निकाल दिया। प्यारे बाबा का लाख-लाख शुक्रिया। अन्त में मैं यही कहना चाहती हूँ कि शिव बाबा इस धरा पर अवतरित होकर काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बना रहे हैं। सभी आत्माएँ ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग सीखकर परमात्मा पिता की असीम कृपा की पात्र बनें। ❖

दैवी संविधान - पूर्व भूमिका

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

प्राण प्यारे शिवबाबा की श्रीमत से 1969 में ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कारोबार के लिए दैवी संविधान या दिव्य संविधान पारित किया गया जिसमें ईश्वरीय कारोबार चलाने के लिए आवश्यक मर्यादायें, अधिकार, कर्त्तव्य आदि के लिए विधान बनाये गये। यह दैवी संविधान यज्ञ कारोबार के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसकी पूर्व भूमिका के बारे में इस लेख में चर्चा करेंगे।

सन् 1936-37 में शिवबाबा ने ब्रह्मा तन द्वारा बहनों की एक कमेटी बनाई जिसकी मुख्य संचालिका मातेश्वरी जी को बनाया गया। उस कमेटी के द्वारा जो भी नियम-मर्यादायें स्थापित हुई वह भी एक प्रकार का संविधान ही था। कोई भी कार्य शुरू करते हैं तो सबसे पहले उसका लक्ष्य एवं अंतिम रूप क्या होगा, यह लिखना पड़ता है और उसी के लिए संविधान बनाया जाता है। जैसे ट्रस्ट के लिए ट्रस्ट डीड बनाया जाता है, सोसायटी के लिए सोसायटी के नियम (Rules & Regulations) बनाये जाते हैं, कंपनी स्थापन के लिए कंपनी के सीमानियम (Memorandum of Association) और अंतर्नियम (Article of Association) बनाये जाते हैं जिनमें कंपनी के उद्देश्य, अधिकार, क्षेत्र, सीमायें और कंपनी के आंतरिक प्रबंध के लिए आवश्यक नियमों का उल्लेख होता है, इसी प्रकार से दो या अधिक व्यक्ति जब मिलकर पार्टनरशिप फर्म शुरू करने का निश्चय करते हैं तो सबसे पहले साझेदारी संलेख (Partnership Deed) बनाते हैं जिसमें फर्म चलाने के लिए आवश्यक बातें जैसे कि फर्म क्या कार्य करेगी, साझेदारों के क्या अधिकार तथा दायित्व होंगे, लाभ-हानि का विभाजन किस अनुपात में होगा आदि-आदि होती हैं। इसी प्रकार बाबा के दैवी परिवार को किस प्रकार नियम और मर्यादाओं के आधार पर चलाना है जिससे कि सारा कारोबार सुचारू रूप से चले और कारोबार में समस्यायें ना आयें उसके लिए दैवी संविधान बनाया गया, जिसके बारे में मैं चर्चा करना चाहता हूँ।

पहले के जमाने में राज्य का प्रमुख राजा होता था और वह अपने विचारों प्रमाण शासन चलाता था और इस कारण संविधान बनाने की ज़रूरत नहीं होती थी। अंग्रेजी में कहावत है – A King can do no wrong. परंतु यह बात वास्तविक रूप से सतयुगी दुनिया में जो राजायें होते थे उनके लिए लागू थी। सतयुगी दुनिया के राजायें सतोप्रधान होने के कारण अपनी प्रजा को पितृवत प्रेम करते थे और सभी को एक समान न्याय देते थे। परंतु जब से द्वापरयुग शुरू हुआ तब से राजायें धीरे-धीरे तमोप्रधान होते गये इसलिए संविधान आदि बनाने की आवश्यकता पड़ने लगी। जैसे द्वापरयुग की शुरूआत में राजा विक्रमादित्य ने भक्ति की शुरूआत की उसी प्रकार संविधान बनाने की शुरूआत भी किसी न किसी ने की होगी। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना के समय से ही शिवबाबा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से जो नियम, मर्यादायें व धारणायें बताईं, उसे ही संगमयुग के दैवी परिवार के संविधान के रूप में माना गया। उसे ही **श्रीमत** कहा गया और उसी अनुसार 18 जनवरी, 1969 तक इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का कारोबार चलता रहा।

ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने से पूर्व विश्वकिशोर दादा एवं भ्राता जगदीश जी ने बहुत मेहनत की और ब्रह्मा बाबा के सामने दो-तीन बार अलग-अलग तरह से संविधान का प्रारूप बनाकर रखा परंतु तब ब्रह्मा बाबा ने कहा था कि बच्चे, अभी इसकी आवश्यकता नहीं है, आगे चलकर देखेंगे। उस समय शिवबाबा ब्रह्मा बाबा द्वारा बच्चों को हर

कार्य की श्रीमत देते थे इसलिए बाबा ने उस समय संविधान बनाने की ज़रूरत नहीं समझी। 18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए, उसके बाद 21 जनवरी को ब्रह्मा बाबा का अंतिम संस्कार होने के बाद जब बाबा को भोग स्वीकार कराया तब अव्यक्त बापदादा ने आदरणीया दादी गुलजार जी के तन में प्रवेश किया और तभी से अव्यक्त मुरली चलाना बापदादा ने शुरू किया। इस बात को आगे बढ़ाने से पहले मैं एक बात बताना चाहता हूँ कि बाबा के अव्यक्त होने से पहले शिवबाबा की श्रीमत के अनुसार वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट की स्थापना हुई। 16 जनवरी, 1969 को इस ट्रस्ट का फाइनल रजिस्ट्रेशन हुआ और उसी दिन मुझे प्यारे ब्रह्मा बाबा का पत्र आया कि आबू में नक्की लेक के पास बूंदी कॉटेज बिकाऊ है और उसका मालिक अहमदाबाद में रहता है, आप उसके मालिक से बात करो। 17 जनवरी को प्रातः मैं अहमदाबाद पहुँच गया। उसी दिन शाम को आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी का मुझे फोन आया कि आप आबू आ जाओ, कुछ जरूरी काम है। मैंने दादीजी से कहा कि मैं 18 जनवरी की रात निकलकर 19 तारीख सुबह आबू पहुँच जाऊँगा। मैंने 18 जनवरी की शाम तक उस मकान मालिक से बात पक्की की। उसने कहा कि 5-6 दिन में वे आबू आकर रजिस्ट्री करवा देंगे। मैं बूंदी कॉटेज का सौदा पक्का होने से बहुत खुश था और यह सारा समाचार ब्रह्मा बाबा को देने के लिए बहुत खुशी से अहमदाबाद से आबू के लिए निकल पड़ा। परंतु ड्रामा की भावी किसको मालूम थी, 18 जनवरी, 1969 को रात 8.30 बजे ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो गये। बाबा के अव्यक्त होने का समाचार देने के लिए दादीजी ने सबसे पहला फोन मुझे ही किया परंतु तब तक मैं अहमदाबाद से निकल गया था। 19 तारीख सुबह मैं माउंट आबू पहुँचा। तब कोई साधन तो थे नहीं, मैंने कुली से सामान उठवाया और बस स्टैण्ड से चलना शुरू किया। मुझे माउन्ट आबू के पोस्ट ऑफिस के पास अपने दो भाई मिले जिन्होंने मुझे एक तार दिखाई जिसमें लिखा था कि ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो गये। यह सुनकर मैं एकदम स्तब्ध हो गया, मेरी सारी खुशी ही चली गई परंतु मैंने फिर भी अपने आप को सम्भाल लिया और पाण्डव भवन में प्रवेश किया। पाण्डव भवन में संतरी दादी, दादी प्रकाशमणि जी और संदेशी दादीजी बैठे थे। जैसे ही दादीजी मुझे बताने लगे तो मैंने कहा कि दादी, मुझे बाबा के अव्यक्त होने का समाचार मिल गया। फिर दादीजी मुझे बाबा के कमरे में ले गये, वहां पर मैंने 3 मिनट योग किया और फिर आगे का कारोबार तो आप सब जानते ही हैं।

21 जनवरी को अव्यक्त बापदादा ने आदरणीया दादी गुलजार जी के तन के द्वारा अव्यक्त मुरली चलाई और बाद में सभी बच्चों को टोली दी। जब मेरा टोली लेने का समय आया तब मैंने अव्यक्त बापदादा से पूछा कि बूंदी कॉटेज के मकान का क्या करना है? तो बाबा ने कहा कि यह मकान खरीदना है तथा वहां पर एक बहुत सुन्दर म्यूज़ियम बनाना है। फिर बाबा ने कहा कि अभी तक ज्ञान सूर्य शिवबाबा और ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा बाबा साथ में कार्य कर रहे थे। अभी बापदादा आप ज्ञान सितारों की रिमझिम देखेंगे। बाबा ने कहा कि अभी आपको सब कारोबार के लिए कोई मार्गदर्शिका तैयार करनी होगी। अभी तो आप हैं परंतु आगे चलकर यह दैवी परिवार बहुत बढ़ेगा अतः सभी के मार्गदर्शन के लिए एक संविधान बनाया जाये। बाबा ने कहा कि इसकी शुरूआत कल से ही करो, मकान खरीदने के लिए मीटिंग बुलाओ और सबके हस्ताक्षर लेकर कारोबार करो। दूसरे ही दिन हम सभी ने मिलकर मीटिंग की और बूंदी कॉटेज का कारोबार फाइनल किया। इस प्रकार मीटिंग आदि कर कार्य करने का नये प्रकार का ईश्वरीय कारोबार शुरू हो गया। इस प्रकार से 22 जनवरी, 1969 को दैवी संविधान बनाने का श्रीगणेश हुआ। फिर शिवबाबा ने श्रीमत दी कि अप्रैल मास में बच्चों

को आपस में मिलकर मीटिंग करनी चाहिए। सभी दादियों और बड़े भाइयों ने मिलकर अप्रैल मास में दिल्ली के कमलानगर सेवाकेन्द्र पर मीटिंग की। हम रोज संविधान के बारे में चर्चा करते थे और जो भी लिखत होती थी वह रात को आदरणीया दादी गुलजार जी के द्वारा बाबा को संदेश भेजते थे, बाबा उसमें जो भी परिवर्धन (addition), संशोधन (correction) तथा परिवर्तन (alteration) करवाते थे उस अनुसार फिर उसे हम ठीक करते थे। इस प्रकार यह मीटिंग पूरे सात दिन चली और दैवी संविधान (Divine Constitution) फाइनल हुआ। बाद में सभी सदस्य मधुबन आये, मधुबन में आदरणीया गुलजार दादीजी के तन में अव्यक्त बापदादा की पधरामणि हुई तब यह संविधान हम सभी ने मिलकर बापदादा के सामने प्रस्तुत किया और बाबा ने उसे अंतिम स्वीकृति दी। हमने फिर बापदादा से पूछा कि कौन-सी तारीख से इस संविधान को लागू करना है? तो बाबा ने कहा कि 24 जनवरी, 1969 से इसे लागू करना है अर्थात् कार्यान्वियन हुआ, ऐसे लिखना है।

मैं आपको यहां पर एक बात बताना चाहता हूँ कि जब 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ तो सबसे पहले देश का संविधान बनाने के लिए एक कमेटी बनाई गई जिसके अध्यक्ष डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर थे तथा अन्य सदस्यों में पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद आदि-आदि नामी वकील थे। उस संविधान कमेटी में जो भी बातें होती थीं, वे उन्हें संसद में सभी के सामने रखते थे, उन पर चर्चा होती थी और इस प्रकार 26 नवम्बर, 1950 को इसे अंतिम रूप दिया गया। बाद में 26 जनवरी, 1950 से यह संविधान भारतवर्ष में कार्यान्वित हुआ। इस प्रकार भारत का संविधान भारत के नागरिकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में तैयार हुआ और भारत एक गणतंत्र के रूप में घोषित किया गया।

जैसे भारत का संविधान पारित हुआ ठीक वैसे ही हमारे दैवी परिवार के कारोबार के मार्गदर्शक के रूप में हमारा दैवी संविधान मान्य हुआ। इस संविधान को बनाने के बारे में मैं लेखमाला लिखना चाहता हूँ जिसमें संविधान क्या है, विश्व में संविधान बनाने की शुरूआत कैसे हुई, भारत में संविधान कैसे बना तथा हमारा दैवी संविधान क्या है आदि-आदि बातें बताना चाहता हूँ। परंतु मैं यह लेखमाला शुरू करूँ उससे पहले आप सभी पाठकगण से पूछना चाहता हूँ कि क्या यह लेखमाला लिखूँ क्योंकि इसमें दुनियावी बातें भी होंगी और साथ-साथ दैवी परिवार के नियम-मर्यादाओं पर भी चर्चा होगी। अगर पाठकगण की स्वीकृति हो तो यह लेखमाला अप्रैल महीने से लिखना शुरू करूँगा। मैं आप सबकी इस विषय पर राय चाहता हूँ, राय मिलने के पश्चात ही लिखना शुरू करूँगा। मैं हर मास ज्ञानामृत में लेख लिखने का पुरुषार्थ करता हूँ और उस पुरुषार्थ में किसी भी प्रकार का अन्तर ना पड़े इसलिए आप सबके विचार शीघ्रातिशीघ्र चाहता हूँ। आप अपनी राय मुझे मेरे फोन या ई-मेल पर भेज सकते हैं। आशा है कि आप अपनी राय इस विषय पर अवश्य ही भेजेंगे, इसके लिए मैं आप सभी का अग्रिम धन्यवाद करता हूँ।

उम्मीद है कि आप भी अवश्य ही जानना चाहेंगे कि दुनियावी संविधान तथा दैवी संविधान का क्या रूप, प्रारूप है तथा इन दोनों में क्या फर्क है, दैवी संविधान बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी आदि आदि। निम्नलिखित मोबाइल नंबर या ई-मेल पर हमें सम्पर्क करें:- मोबाइल नं.- 09920675377

E-mail: rameshah@gmail.com

इन्द्रियों के गुलाम की बजाय इंद्रियों के मालिक बनना ही मास्टर डिग्री लेना है

दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव की मनमोहक झलकियाँ

शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में 29-01-2016 की शाम को हजारों की संख्या में देश-विदेश से आए व्यक्तियों की उपस्थिति में, मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, सैनिक बैण्ड की धुनों के साथ ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी के जन्मशताब्दी महोत्सव की विधिवत् शुरूआत हुई। रूस के डिवाइन लाइट ग्रुप व बॉलीवुड फिल्म अभिनेत्री ग्रेसी सिंह

की गीत-नृत्य प्रस्तुतियों व रूसी कलाकार अल्बर्ट असादुलीन द्वारा भारतीय सिनेमा के महान कलाकार राजकपूर की फिल्म 'श्री 420' के गीत 'मेरा जूता है जापानी...' ने दर्शकों को अभिभूत कर दिया।

भव्य समारोह को संबोधित करते हुए के. जी. अस्पताल कोयम्बटूर के अध्यक्ष **पद्मश्री डॉ. जी. भक्तवत्सलम** ने दादी जानकी को महान मानवीय

व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में चल रही संस्था सबको प्रेम की भाषा सिखाती है। सौ वर्ष की उम्र में भी जब दादी जानकी सलाह और दुआयें देती हैं तो महसूस होता है कि जिस भगवान को हम देख नहीं पाते वे मधुबन में बसते हैं। उन्होंने कहा कि इस संस्था से ग्रहण किए गए संदेश से उनके जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया है और ईश्वर के सत्य को समझने की क्षमता विकसित हुई है।

एस.आर.ई.आई. फाउंडेशन, कोलकाता के अध्यक्ष भ्राता हरिप्रसाद कनोडिया ने कहा,

ब्रह्माकुमारीज़ का ईश्वरीय ज्ञान गांव स्तर तक भी जा पहुँचा है। ओमशान्ति के मूलमंत्र को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देकर दादी जी सच्ची मानव सेवा कर रही हैं।

राजस्थान पत्रिका के मुख्य संपादक व जाने-माने चिंतक भ्राता गुलाब कोठारी ने अपने भावपूर्ण

संबोधन में कहा कि कई सालों से जाग्रत जिज्ञासाएँ, आज दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के सानिध्य में वार्तालाप से शांत हुई हैं। ईश्वर ने अपना संदेश संवाहित करने की पात्रता इन दादियों को दी है। आधुनिक

युग की शिक्षा भौतिकवाद को प्रोत्साहित करती है लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ के मधुबन से विकास व श्रद्धा की भावना संवाहित होती है। यहाँ से असीम मातृभाव विकसित होता है लेकिन बदले में किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं की जाती। मातृशक्ति की जो प्रतिष्ठा इस संस्थान में दिख रही है उससे नि:संदेह मूल्य-शून्य समाज को नया स्वरूप प्रदान करने की उम्मीदें उठ खड़ी हुई हैं। दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के समारोह में पधारने पर उपस्थित जनसमूह ने अपने स्थान से खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ स्वागत किया। शताब्दी समारोह के संगठन सचिव ब्र.कु.मृत्युंजय भाई ने पुष्पमालाएँ व पगड़ियाँ भेंट करके दादी का अभिनंदन करते हुए इस महोत्सव को संस्था के इतिहास का स्वर्णिम दिवस करार दिया।

देश-विदेश से आए व्यक्तियों द्वारा जन्मशताब्दी पर दी गई शुभकामनाओं को स्वीकार करते हुए दादी जानकी जी ने कहा कि यदि अंतर्मन साफ है तो जो भी शुभ संकल्प करोगे, अवश्य पूरे होंगे। उन्होंने कहा कि जीवन में कभी सत्य का परित्याग न करो और सच के मार्ग पर चलते हुए घबराओ मत। ब्रह्मा बाबा शिक्षक भी हैं और परीक्षक भी। उनकी रचना अति सुंदर है। बाबा के दिखाए मार्ग पर चलते हुए हमें सर्वत्र शान्ति, प्रेम और आनंद का संदेश प्रसारित करना है।

भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्री जे.पी.नड्डा ने 30.01.2016 के प्रात:कालीन सत्र में कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरे देश में ही नहीं बल्कि विश्व में महिलाओं के सशक्तिकरण का बेहतरीन कार्य कर रही है। हम सबको दादी से सीख लेकर अपने जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करना है। उन्होंने कहा कि संस्था समाज के उत्थान के लिए कई योजनायें चला रही है जो वास्तव में सरकार का कार्य है। ऐसे में सरकार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के साथ मिलकर राष्ट्रव्यापी योजनाएँ चलायेगी। दादी जानकी ने सिद्ध कर दिया है कि राजयोग से जीवन में उत्कृष्टता और बदलाव आता है। नारी महान शक्ति है, नारी के उत्थान के बिना समाज का उत्थान मुश्किल है। यह दुनिया का पहला संस्थान है जहाँ महिलाएँ शीर्ष पर हैं और दादी के निर्देशन में बेहतर समाज की स्थापना का कार्य कर रही हैं।

गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता ओमप्रकाश कोहली जी ने कहा कि हिंसा, मूल्यों के हनन व हर प्रकार के प्रदूषण के जिस वायुमंडल से हम गुजर रहे हैं उसमें दादी जानकी का संदेश आशा की किरण पैदा करता है। उन्होंने कहा कि दादी जानकी विश्व की महान आध्यात्मिक हस्तियों में सम्माननीय स्थान रखती हैं। इस विश्व पर अनैतिकता और आतंकवाद के बादल मंडरा रहे हैं। धर्म को प्राय: शाब्दिक बहस का विषय माना जाता है जबकि यह मूल्यों को जीवन में उतारने का विषय है। यू.एन.से मान्यता प्राप्त यह संगठन समाज को बाहर से ही नहीं बल्कि भीतर से भी परिवर्तित करने का सबसे बड़ा आंदोलन बनकर उभरा है। हमें पग-पग पर सहयोग करके इस आंदोल को सफल बनाना होगा।

गोवा की राज्यपाल महामहिम मृदुला सिन्हा ने कहा कि दादी जानकी की जन्मशताब्दी पर उमड़ा मानव सागर, समाज कल्याण का सूत्र निकालने वाली इस महान हस्ती के प्रति स्नेह एवं सम्मान को प्रतिबिम्बित करता है। ममता से ओतप्रोत समाज के पुनर्निर्माण का संदेश यहाँ से लेकर जाना चाहिए। (शेष..पृष्ठ 16 पर)

चेत प्राणी चेत

ब्रह्माकुमार डॉ.प्रेमचन्द सैनी, डेराबस्सी (पंजाब)

आज संसार में चारों ओर हा-हाकार मच रहा है, कोई तन से, कोई मन से, कोई धन से, कोई औलाद से, कोई माँ-बाप से, कोई रिश्तेदारों से, कोई स्वयं से तथा कोई दूसरों की उन्नति से अत्यन्त दुखी है। दुखों से निजात पाने के लिये कभी तीर्थों पर जाते हैं, कभी मन्दिरों में, कभी नदियों पर, कभी कब्रों पर, कभी यज्ञ, कभी जगराते, कभी दान-पुण्य और कभी भण्डारे आदि करते हैं कि किसी तरह शान्ति मिल जाये परन्तु जब कोई राहत नहीं मिलती तो इन दुखों का कारण ढूंढ़ते हैं। कभी सरकार को दोषी ठहराते हैं, कभी पार्टियों को, कभी धर्मों को, कभी विद्यार्थियों को, कभी समाज को और कभी-कभी तो भगवान को ही दोषी सिद्ध करते हैं। भीड़ इकट्ठी करके, बड़े-बड़े स्पीकर लगाकर एक-दूसरे पर आरोप लगाते हैं परन्तु नहीं जानते कि वास्तव में असली दोषी कौन है?

शान्तिप्रिय मधुमक्खियों को आया गुस्सा

एक बार बहुत ही सुन्दर कोठी के छज्जे पर मधुमक्खियों का एक बड़ा-सा छत्ता लगा हुआ था, वे मधुमक्खियाँ सुबह से शाम तक जाने कहाँ-कहाँ से मधु इकट्ठा करके लातीं और छत्ते में रख देती। कभी-कभी कोई शहद निकालने वाला आकर शहद चुरा ले जाता और बेच देता परन्तु परोपकारी मक्खियाँ शान्त मन से शहद इकट्ठा करती ही रहती। एक दिन एक शरारती ने, शरारत वश होकर एक बड़ा-सा पत्थर बहुत जोर से छत्ते में दे मारा। फिर क्या था, अनेक मक्खियाँ मर गई। फिर उन शान्तिप्रिय मक्खियों को गुस्सा आ गया और हर आने-जाने वाले को लगी काटने, चाहे कोठी वाला हो, चाहे पत्थर मारने वाला हो, चाहे शहद चुराने वाला हो या फिर कोई बेकसूर हो, सभी को जमकर काटा और चारों ओर हा-हाकार मचवा दिया। क्या आप बता सकते हैं कि कसूर किसका है? पत्थर द्वारा छेड़-छाड़ करने वाले का है ना, उसने शान्तिप्रिय परोपकारी मेहनती मक्खियों से छेड़-छाड़ जो कर दी।

खा लिया प्रकृति की सुन्दर सौगात को

प्रिय आत्मिक भाइयो, हमारे हा-हाकार का असली कारण भी यही है कि हमने परोपकारी, सुख-शान्तिमय प्रकृति से छेड़-छाड़ शुरू कर दी। प्रकृति ने हमें क्या नहीं दिया? अपने पाँच तत्वों से इतना सुन्दर शरीर बनाकर दिया, जीने के लिए स्वच्छ हवा दी, पीने के लिये शुद्ध जल दिया, खाने के लिये अनेक प्रकार के फल, अनाज, सब्जियाँ तथा कन्द, मूल आदि दिये। सुन्दर पहाड़ दिये, हरियाली दी, कल-कल करते झरने, गर्मी, सर्दी, बरसात तथा बसन्त जैसे सुहावने मौसम दिए। रोशनी और तपस के लिए सूर्य, शीतलता से भरपूर चन्द्रमा दिया, संसार रूपी रंगमंच को झिलमिलाते सितारों से सुशोभित किया। मनोरंजन के लिए मीठे गीत सुनाने वाली कोयल, नाचने वाला मोर, गाने वाला पपीहा, मैना, तोता, चिड़िया, कबूतर आदि रंग-बिरंगे पंछी दिये। बच्चों को पालने के लिये दूध पिलाने वाली गाय दी, भैंस दी जिन्होंने अपने बच्चों की परवाह ना कर हमारे बच्चों को सारा दूध निस्वार्थ दे दिया। गधा, घोड़ा, भेड़, बकरी आदि अनेक प्रकार के पशु हमारी सेवा के लिए ही तो बनाये 'परन्तु' हमने क्या किया? प्रकृति की इस सुन्दर सौगात को ही खा लिया। वाह रे इन्सान! 36 प्रकार के भोजन छोड़ प्रकृति के सुन्दर उपहार को ही खा लिया! तेरी इन्सानियत और तेरी वफादारी का क्या कहना!

क्या औकात है तेरी?

जिस प्रकृति ने तुझे इतने अमूल्य उपहार दिये उसी को तू नंगा करने लगा! कभी चन्द्रमा पर जाता है, कभी मंगल

को खोजता है, कभी सागर की गहराई नापता है तो कभी पृथ्वी का व्यास, पर मैं तेरे से पूछता हूँ कि क्या तूने कभी अपने को भी जानने की कोशिश की है कि मैं कौन हूँ। सारा दिन मैं-मैं करता रहता है, पर कभी जानने की इच्छा जताई कि मैं कहाँ से आया हूँ, मेरा पिता कौन है, मेरा घर कहाँ है और मैं क्या करने आया हूँ। सारा दिन झूठ बोलना, कुकर्म करना, माँ-बाप को भी धोखा देना, यहाँ तक कि भगवान से भी धोखा करने से नहीं डरता है। अपने आप को ही खुदा समझता है। मैं पूछता हूँ, तेरी औकात ही क्या है? क्या तू रावण से बड़ा अधर्मी है? क्या हिरण्यकश्यप से भी ज्यादा अत्याचारी है? क्या कंस से ज्यादा निर्दयी है? अरे जब वे नहीं रहे तो तेरी तो औकात ही क्या है? अभी समय है, चेत जा भैया, चेत जा, परमपिता शिव स्वयं लेने आये हैं और कह रहे हैं कि विश्व अभी बदलेगा, भूचाल आयेंगे, सुनामी आयेगी, बर्फ पड़ेगी, सूखा पड़ेगा, बीमारियाँ फैलेंगी, बाढ़ आयेगी, गृहयुद्ध होंगे, ऐटामिक शक्ति चलेगी, कत्लेआम होगा, इन सभी का ज़िम्मेवार इन्सान ही तो है।

पूर्वकाल के देवतुल्य इन्सानों के महान चरित्रों के कारण आज तक मन्दिरों में उनके चित्रों की पूजा होती आ रही है परन्तु दुश्चरित्रों के कारण आज के चित्रों पर जूतों की वर्षा भी होती है और पुतले बनाकर जलाये जाते हैं। भगवान कहते हैं, समय भयानक आ रहा है, कभी भी, कुछ भी हो सकता है। अत: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की किसी नजदीकी शाखा से सम्पर्क कर अपना भविष्य उज्ज्वल बनायें, नहीं तो बहुत भयंकर सज़ायें खानी पड़ेंगी। अगर तुम हिम्मत ना करो तो तुम्हारा भाग्य। फिर कहता हूँ, चेत प्राणी चेत, नहीं तो खाली रह जायेगा खेत। ❖

ठीक होने का विश्वास बनाए रखें

ब्रह्माकुमारी सरिता, रजौरी गार्डन (नई दिल्ली)

ईश्वरीय ज्ञान में सन् 1997 से हूँ। अगस्त, 2012 में एक बार तबीयत बहुत खराब थी। लौकिक भाई को फोन किया कि डॉक्टर के पास ले चलो। भाई व बेटा घर के पास एक हॉस्पिटल में ले गए। डॉक्टर ने एक महीने पहले की रक्त जाँच पढ़ कर कहा, इन्हें कैन्सर हॉस्पिटल में ले जाओ। फिर मुझे दिल्ली के राजीव गाँधी कैन्सर हॉस्पिटल ले जाया गया। रास्ते में भाई ने कहा, बहन, आपको कैन्सर बता रहे हैं। सुनकर मुझे कोई हलचल नहीं हुई। हॉस्पिटल गए तो जाँच के बाद बताया कि ब्लड कैन्सर है, दूसरी स्टेज है। अब बात आई कि इलाज यदि इसी जगह करवाते हैं तो लाखों लग जायेंगे, पति हैं नहीं, बेटे ने अभी कमाना शुरू ही किया है। सबसे राय ली कि कहाँ इलाज करवाएँ। पति के जाने के बाद भी मुझे ऑफिस से मेडिकल सुविधा प्राप्त है। पति के एक दोस्त ने कहा, आप डॉक्टर से सम्भावित खर्च के कागज़ बनवाकर ऑफिस भेज दो। मैंने ऐसा ही किया। शाम तक ऑफिस से जवाब आ गया, खर्च हम देंगे, आप इलाज शुरू करो। सबने कहा, यह तो तेरे बाबा की कमाल है। फिर बाबा ने वहीं मेरा इलाज करवाया। साथ-साथ बाबा ने डॉक्टर व मरीजों की सेवा करवाई, उनको बाबा का परिचय दिया। इलाज के दौरान खाली समय में मुरली पढ़ती, किताबें पढ़ती, मेडिटेशन करती। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। हॉस्पिटल के डॉक्टर भी अब कहते हैं, हम अपने मरीजों को कहते हैं, ब्रह्माकुमारी सेंटर जाकर मेडिटेशन करना सीखो।

इलाज के साथ-साथ, लौकिक परिवार की दुआएँ, शुभकामनाएँ बहुत काम आईं। सेवाकेन्द्र की बहनों ने मेरे अच्छे स्वास्थ्य के लिए बाबा से खूब योग किया। मैं बाबा के साथ-साथ उन सबका भी कोटों धन्यवाद करती हूँ। वाह! बाबा! वाह! आपका शुक्रिया। कैन्सर की बीमारी का यदि किसी को पता चले तो यही कहूँगी – मरने से पहले मरना नहीं। मन में विश्वास बनाए रखें, मैं ठीक हो जाऊँगा। ❖

दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव की मनमोहक झलकियाँ

(पृष्ठ 13 से आगे)

नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति रामबरण यादव ने नेपाल के लाखों भाई-बहनों की ओर से दादी जानकी जी को बधाई व शुभकामनाएँ भेंट करते हुए उन्हें महान तपस्विनी बताया जिनके नेतृत्व में ब्रह्माकुमारी संस्था पवित्रता, सद्‌भाव, समता व नैतिकता का संदेश नेपाल के भी प्रत्येक कोने में प्रसारित कर रही है।

दादी जानकी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि ब्रह्मा बाबा को महात्मा गांधी से सादा जीवन व उच्च विचारों की प्रेरणा मिली, इन्हें ही मैंने अपनाया। अब लोगों को विश्वास रखना चाहिए कि कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है। सदैव सत्य और आनंद में रहने तथा मुसकराने की प्रेरणा देते हुए दादी ने कहा कि किसी भी शुभ कार्य का श्रेय बाबा को दिया जाना चाहिए, हम तो निमित्त मात्र हैं। **दादी हृदयमोहिनी** ने भी भारी संख्या में आए भाई-बहनों को साधुवाद देते हुए विश्वास जताया कि वे स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के अभियान में सहभागी बनेंगे।

देश की प्रथम आदिवासी महिला राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मु ने दादी जानकी जन्म शताब्दी महोत्सव में 30 जनवरी के सायंकालीन सत्र में कहा कि मात्र छः वर्षों के ईश्वरीय ज्ञान ने ही उनको जीवन का सही परिचय कराया और लौकिक परिवार में आयी त्रासदी ने उन्हें अलौकिक परिवार का सदस्य बना दिया। भावनाओं से परिपूर्ण संबोधन में झारखंड की महामहिम राज्यपाल ने कहा कि वह ब्रह्माकुमारी संस्था की बदौलत ही इस मुकाम पर पहुँची हैं। जीवन में ऐसा परिवर्तन आया कि शिक्षा प्राप्त करके वे समाज सेवा से जुड़ गई और फिर ऐसा अनुभव हुआ कि उनका सही कार्यस्थल ब्रह्माकुमारी संस्था ही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर जोन प्रभारी डॉ.बजरंग लाल गुप्ता ने कहा कि हीरे तराशने वाले दादा लेखराज को परमात्मा ने अचानक अपना दिव्य रूप दिखाते हुए दुनिया तराशने का कार्य सौंप दिया। उनके द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारी संस्था ने लाखों लोगों को शिक्षित व दीक्षित करके मार्गदर्शन प्रदान किया। यह सौभाग्य भी इसी संस्था को प्राप्त है कि स्नेह की सरिता और करुणा की सागर इसकी मुख्य प्रशासिका दादी जानकी सौ वर्ष की उम्र में भी बखूबी इसका संचालन कर रही हैं।

राजस्थान के ग्रामीण विकास व पंचायती राज्यमंत्री भ्राता सुरेन्द्र गोयल ने दादी जानकी को अनगिनत गुणों की खान बताते हुए कहा कि इनके सानिध्य में मन को शान्ति प्राप्त होती है।

उत्तराखण्ड के चिकित्सा व परिवार कल्याण मंत्री भ्राता सुरेन्द्र सिंह नेगी ने कहा कि सौ वर्ष की उम्र में जीवन में आध्यात्मिकता को नयी दिशा प्रदान करने वाली दादी जानकी का जन्मोत्सव महापर्व बनकर उभरा है। दादी ने विश्व में नयी चेतना लाने का अद्‌भुत कार्य कर दिखाया है। इनका संदेश घर-घर पहुँचाया जाना चाहिए।

भारतीय विदेश नीति परिषद् के अध्यक्ष डॉ.वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि पिछले छः दशकों में उन्होंने 80 देशों की यात्राएँ कीं लेकिन कहीं भी किसी महापुरुष का सौवाँ जन्मदिन मनाते लोगों को नहीं देखा। दादी जानकी व ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व भर में महिलाओं द्वारा संचालित सबसे महान एवं ब्रह्मचर्य की शपथ ग्रहण करने वाली एकमात्र संस्था है जो नारी शक्ति का शंखनाद कर रही है। उन्होंने कहा कि वेदों में भी लिखा है कि ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। इनके कार्य को देखकर विश्वास उत्पन्न होता है कि

भारत अवश्य ही एक महान शक्ति बनकर उभरेगा।

भास्कर समाचार समूह के अध्यक्ष भ्राता रमेश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि दादी जानकी ने विश्व कल्याण के

लिए सौ वर्ष की उम्र में भी देश-विदेश का भ्रमण जारी रखकर एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिस शान्ति की खोज में अन्य देश भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं उसकी स्थापना ब्रह्माकुमारीज़ का लक्ष्य है। यह संस्था संदेश देती है कि जब मन में शान्ति और आनंद की अनुभूति करेंगे तभी बाहर शान्ति स्थापित करना संभव होगा। इस संस्था से जुड़े असंख्य लोग नि:स्वार्थ भाव से सेवा में लगे हुए हैं। उनके चेहरों पर आनंद की अनुभूति सहज ही देखी जा सकती है। श्री अग्रवाल ने कहा कि पैसा कमाना पाप नहीं लेकिन उसका अहंकार करना पाप है। यदि पैसे से सुख खरीदा जा सकता तो सबसे ज्यादा सुखी लोग अमेरिका और जापान में दिखाई देते लेकिन वहाँ भी सुख की तलाश में लोग भटक रहे हैं।

राजस्थान के गृहमंत्री भ्राता गुलाब चंद कटारिया ने 31 जनवरी के प्रात:कालीन सत्र में कहा कि विश्व की

किसी प्रथम आध्यात्मिक विभूति के जन्मशताब्दी महोत्सव का आयोजन आबू रोड में होने से मरूभूमि के गौरव को चार चांद लग रहे हैं। लगभग 140 देशों से हजारों की संख्या में महानुभावों के शान्ति की खोज में शान्तिवन आगमन से न केवल ब्रह्माकुमारी संस्था बल्कि राजस्थान सरकार का भी मान-सम्मान बढ़ा है। प्रदेश के प्रत्येक कोने में सक्रिय इस महान संस्था से विकास कार्यों में सहयोग की अपेक्षा रहती है। श्री कटारिया ने दादी जानकी को शताब्दी पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ भेंट की।

कॉरपोरेट सेक्टर में देश की प्रथम बैंक प्रमुख एवं वर्तमान में व्यवसायिक बैंकों में घपले रोकने के लिए सरकार द्वारा गठित आयोग की अध्यक्षा बहन **रंजना कुमार** से पांच वर्षों से जुड़ाव के आधार पर कहा कि

ब्रह्माकुमारीज़ जीवन में सहजता, शान्ति, संतोष की भावना का संचार करती है। तनाव रहित कार्यकर्त्ताओं के चेहरों पर हर पल, हर क्षण उमंग व उत्साह उभरता दिखाई देता है। यह सेवानिवृत्ति के बाद भी जीवन प्रबंधन की कला सीखने और समाजसेवा से जुड़ने के इच्छुक लोगों के लिए प्रेरणादायक है। हमें इस धरती से यह संदेश मिलता है कि यदि नियत साफ है तो लक्ष्य प्राप्त करना कठिन नहीं है। कार्यक्षमता और ईश्वरीय ज्ञान अवश्य ही सही दिशा प्रदान करेंगे।

अमेरिका से आए शान्ति व मानवाधिकारों के क्षेत्र में

नाम कमाने वाले मंत्री **माइकल मोरन** ने कहा कि दादी जानकी ने पूरे विश्व में शान्ति का संदेश फैलाया। हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि इस संदेश से कोई भी प्राणी अछूता न रहे।

रामकृष्ण मिशन कोलकाता के स्वामी सम्पूर्णानंद ने कहा कि राजयोगिनी दादी जानकी द्वारा सौ वर्ष का स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन बिताना नि:संदेह अद्भुत एवं प्रेरणादायी है। जिस शान्ति की दादी संदेशवाहक हैं वह हमारे जीवन में भी तभी आ सकती है जब हम दूसरों में दोष ढूँढ़ना बंद कर देंगे। (शेष .. पृष्ठ 32 पर)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष...

सशक्तिकरण महिला का या पुरुष का या दोनों का?

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आज चारों ओर महिला सशक्तिकरण की आवाज बड़े जोर-शोर से सुनाई दे रही है। आइये गहराई से जाँच करें कि क्या वास्तव में ही महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता है या वास्तव में पुरुषों के सशक्तिकरण की ज्यादा आवश्यकता है?

चाहिए सशक्त रथवान

वर्तमान युग पुरुष प्रधान युग है। किसी भी परिवार का मुखिया पिता होता है, फिर उसका पुत्र और फिर उसका पुत्र। महिला के जीवन को देखें तो अधिकतर परिवारों में आज भी पहले वह पिता और भाई के संरक्षण में रहती है, फिर पति के और पुत्र के संरक्षण में। परिवार अपने आप में एक काफिला है जिसका नेता बनकर पुरुष उसे आगे बढ़ाता है। उस परिवार में कई प्रकार के आयु वर्ग के, स्वभाव, संस्कार के लोग मौजूद रहते हैं। भिन्नता से भरी परिवार रूपी गाड़ी को खींचने वाला घर का मुखिया स्वयं कैसा है? क्या वह सशक्त है? जब कई डिब्बों वाली गाड़ी खींचनी हो तो इंजन को सशक्त बनाया जाता है, जब बैलगाड़ी भारी सामान से भरी हो तो बैलों की शक्तिशाली जोड़ी ली जाती है, इसी प्रकार परिवार रूपी रथ को खींचने वाला रथवान भी तो सशक्त होना चाहिए।

कहाँ सख्ताई करें और कहाँ नरमाई?

इसमें कोई शक नहीं कि जिन बातों में हम नारी को सशक्त करने की बात करते हैं उन सबमें नर पहले से सशक्त है जैसे 'बेटी बचाओ' कहा जा रहा है पर बेटे तो बचे ही रहते हैं। 'बेटी पढ़ाओ' कहा जा रहा है पर बेटे तो पढ़ाए ही जाते हैं और 'बेटी को सम्पत्ति में हक मिले' यह कहा जाता है पर बेटों का हक तो जन्मजात है ही, फिर भी पुरुष के सशक्तिकरण की बात हमने क्यों उठाई है?

आइये एक उदाहरण देखें, एक परिवार में दहेज को लेकर बहू को सताया गया, उसने पुलिस में रिपोर्ट कर दी और सारा परिवार जेल में चला गया। जब ससुर से पूछताछ की गई तो उसने कहा, मैं क्या करूँ, इसकी सास को मैं तो बहुत मना करता था पर मेरी उसने मानी कहाँ, मैं तो निर्दोष हूँ, दोष तो सारा मेरी घरवाली का है। विचार कीजिए, क्या वह घर का मुखिया सशक्त है? घर के मुखिया को उसकी पत्नी ने कुछ दिन पहले कहा था, मेरा मन अशान्त रहता है, पास में ही ब्रह्माकुमारीज़ की पाठशाला है, आप कहें तो मैं सुबह-शाम शान्ति के लिए चली जाया करूँ? यह सुनते ही घर का मुखिया आग-बबूला हो उठा, 'कोई जरूरत नहीं कहीं जाने की, घर से बाहर निकली तो टांगें तोड़ दूँगा।' बेचारी डरकर घर में बैठ गई। मन तो अशान्त था ही वह अशान्ति बहू पर उतरने लगी। जब केस बन गया तो ससुर कहता है, घरवाली ने मेरी मानी नहीं पर क्या सचमुच वो मनवाना चाहता था? जैसे सत्संग के लिए उसने कहा, वहाँ गई तो टांग तोड़ दूँगा, इसी प्रकार बहू को सताते देख भी अगर इतनी ही शक्ति से कहा होता कि यदि बहू को दहेज

के लिए कुछ भी कहा या सताया तो टांगें तोड़ दूँगा, तो जैसे वह सत्संग में जाने से डर गई वैसे ही दहेज के लिए प्रताड़ित करते वक्त भी डर जाती। यह तो हमने एक उदाहरण लिया पर जीवन में कई प्रसंगों में हमें निर्णय लेने की जरूरत होती है। अत: हम जहाँ सख्ताई करनी है वहाँ सख्ताई करने में और जहाँ नरमाई रखनी है वहाँ नरमाई रखने की समझ में सशक्त बनें। शान्ति-प्राप्ति के प्रयासों तथा पुरुषार्थ को प्रोत्साहन दें और लालच के वश प्रताड़ना के विरुद्ध सख्त कदम उठाएँ।

माता-पिता को प्रशिक्षण क्यों नहीं?

एक वकील पिता और शिक्षिका माता सुबह घर से सेवाकार्य पर निकलते हैं और शाम को घर लौटते हैं। उनका इकलौता पुत्र दोपहर दो बजे स्कूल से घर आ जाता है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पड़ोस के बच्चों के साथ खेलने जाता है और गुटखा खाना सीखते-सीखते, शराब पीना सीख जाता है। माता-पिता को तो तब पता चलता है जब 4 साल तक खाते-पीते वह पक्का नशाबाज बन जाता है और ज्यादा पैसे मांगने लगता है। अब मासिक जेबखर्च पाँच हजार तक पहुँच गया है। न दो तो मरने और मारने की धमकी देता है। विचार कीजिए, जो पिता दूसरों के केस सुलझाता है उसका अपने घर का केस बिगड़ गया और जो माता दूसरों के बच्चों को पढ़ाती है उसका अपना बच्चा पढ़ते हुए भी नासमझ हो गया। क्या हमें नहीं लगता कि ऐसे माता-पिता के सशक्तिकरण की जरूरत है? खासकर पिता के सशक्तिकरण की क्योंकि घर का निर्णय अधिकारी तो वही है। हम पुलिस को प्रशिक्षित करते हैं, सेना को प्रशिक्षित करते हैं, शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं ताकि ये सशक्त होकर ठीक कार्य करें तो माता-पिता को प्रशिक्षण क्यों नहीं ताकि वे सन्तान की पालना मूल्यों के साथ करें।

प्यार और सम्मान बढ़ाने वाला

एक अन्य उदाहरण लीजिए, एक पढ़े-लिखे, कम्पनी के मैनेजर बने इकलौते लड़के की शादी हो गई। अब वह घर का मुखिया है, माता भी हर बात उससे पूछती है और पत्नी भी उसका कहना मानती है परन्तु माता और पत्नी में आपसी टकराव है छोटी-छोटी बातों पर जैसे कि यदि वह पत्नी के साथ खाना खाता है, उसकी पसन्द की शर्ट पहनता है, उसके साथ घूमने जाता है तो माँ को अवसाद हो जाता है और यदि माँ के साथ खाता, उससे हँसता-बहलता, उसके पास बैठता तो पत्नी नाराज। कार्यालय में भी 500 कामगारों में से कोई हड़ताल की धमकी देता है, कोई तनख्वाह बढ़ाने के लिए कहता है, कोई अलग संगठन बनाता, कोई सामने बोलता, कोई चापलूसी करता, कोई...। अनेक समस्याओं से घिरा यह मैनेजर घर में भी अशान्त, कार्यालय में भी अशान्त। क्या आप अशान्त व्यक्ति को सशक्त कहेंगे? यदि कोई कहे, माँ और पत्नी के कारण अशान्त है तो सवाल यह है कि मुखिया होने के नाते, घर की बागडोर अपने हाथों में रखने के नाते, धन-दौलत का हकदार होने के नाते उनके दोषों को मिटाने और उन दोनों को प्रेम से चलाने की शक्ति क्या उसमें नहीं होनी चाहिए? कामगारों के बीच रहते, विपरीत परिस्थितियों को समाने और सामना करने की शक्ति की क्या उसे ज़रूरत नहीं है? मूल्यों से सशक्त पति और पुत्र कभी, पत्नी और माँ के बीच झगड़े का कारण नहीं बनेगा। यादगार शास्त्र रामायण में श्रीराम का मूल्यों से सशक्त स्वरूप दिखाया गया है। वह अपने मूल्यों के बल से माँ कौशल्या और पत्नी सीता के बीच कभी झगड़ा बढ़ाने वाला नहीं बना बल्कि उनके बीच प्यार और सम्मान बढ़ाने वाला सिद्ध होता है। कोई कह सकता है आज वो समय कहाँ? पर समय तो बनाने से बनता है। यदि आज घर के मुखिया स्वयं मूल्यों में सशक्त बनकर अपने परिवार और बच्चों को लिए आदर्श बनेंगे तो युग बदलते देर थोड़े लगेगी। युग को बनाने और बदलने वाले हम हैं।

नैतिक-आध्यात्मिक सशक्तिकरण से बनेगा सन्तुलित समाज

घर के मुखिया के पास शारीरिक बल, धन-बल, पद-बल है पर ऊपर हमने जिन भिन्न-भिन्न स्थितियों का वर्णन

किया उनका प्रबन्धन करने के लिए इन तीनों बलों से बढ़कर एक अन्य बल की जरूरत है और वो है आध्यात्मिक बल, नैतिक-बल और चारित्रिक बल। नारी में ये बल पुरुष की भेंट में स्वाभाविक रूप से ज्यादा होते हैं। आज चारों तरफ नारी को धन, शिक्षा, पद, स्वतन्त्रता आदि देने की मांग जोर-शोर से उठी है क्योंकि वह लम्बे समय से इनसे वंचित रही है। तो जैसे भौतिक अधिकारों से वंचित नारी को अब इनमें सशक्त किया जा रहा है इसी प्रकार लम्बे समय से आध्यात्मिक, नैतिक गुणों से वंचित घर के मुखिया को भी इनसे सशक्त होने की जरूरत है, नहीं तो यदि नारी में आध्यात्मिक और भौतिक दोनों बल आ गए और घर के मुखिया केवल भौतिक बल के सहारे डगमगाते हुए चलते रहे तो समानता तो फिर भी नहीं आएगी। एक सन्तुलित समाज तभी बन पाएगा जब घर के, समाज के, कार्यालयों के प्रधानों का भी नैतिक-आध्यात्मिक सशक्तिकरण हो और वे मूल्यों को साथ लेकर घर, समाज और कार्यालयों का संचालन करें। इस प्रकार, दोनों को अपनी-अपनी कमजोरियाँ मिटाकर सशक्त होने की जरूरत है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मूल्यों द्वारा सशक्त करके भारत को पुनः रामराज्य बनाने के पुरुषार्थ में सदा तत्पर है। आप परिवार-सहित अपने कदम इस ओर अवश्य बढ़ाइये और मूल्यों की धारणा द्वारा रामराज्य लाने में सहयोगी बनिए। ❖

श्रद्धांजलि

बापदादा की अति स्नेही, ब्राह्मण परिवार की स्नेही, गुजरात, मणिनगर सबजोन के नार सेवाकेन्द्र की निमित्त संचालिका भानु बहन ने सन् 1969 में ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया और सन् 1975 में बाबा की सेवा में समर्पित हुई। सदा अंतर्मुखी, शांत, योगयुक्त और सेवा में हाँ जी का पाठ पक्का रखने वाली भानु बहन का पिछले कुछ दिनों से स्वास्थ्य ठीक नहीं था। दिनांक 21 जनवरी, 2016 सतगुरुवार, प्रातः 5.00 बजे आपने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। बापदादा की लगन में रहने वाली ऐसी विशेष आत्मा को पूरा ब्राह्मण परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

बापदादा की अति लाडली, ब्राह्मण परिवार की स्नेही, सदा बेहद सेवाओं में उपस्थित बैंगलोर वीवीपुरम सबजोन से संलग्न धर्मावरम सेवाकेन्द्र की निमित्त संचालिका पुष्पा बहन (मधुबन की पंकजा बहन की लौकिक छोटी बहन) जिन्होंने अथक बन समर्पित रूप से पहले बॉम्बे और दिल्ली में सेवायें दीं, फिर आंध्र प्रदेश में सेवाओं के निमित्त बनी। अचानक कुछ समय से आपका स्वास्थ्य बिगड़ता गया, 26 जनवरी, 2016 सवेरे-सवेरे अमृतवेले 3.45 बजे आपने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। बापदादा की लगन में रहने वाली ऐसी विशेष आत्मा को पूरा ब्राह्मण परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। आपके शरीर की आयु 65 वर्ष थी और आप 1973 से समर्पित रूप से ईश्वरीय सेवायें दे रही थी।

बापदादा की अति स्नेही, सर्व की सहयोगी, दिल्ली जोन के रोहतक (हरियाणा) सेवाकेन्द्र की निमित्त संचालिका ब्र.कु.कोकिला बहन जी ने सन् 1971 में ईश्वरीय ज्ञान लिया तथा सन् 1990 से समर्पित रूप से ईश्वरीय सेवाएँ दे रही थीं। आप हर्षितमुख, मिलनसार और सर्व की स्नेही थीं। कुछ समय से हृदयरोग और मधुमेह के कारण आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। आपकी आयु 70 वर्ष की थी। 2 फरवरी, 2016 को आपने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। बापदादा की लगन में रहने वाली ऐसी विशेष आत्मा को पूरा दैवी परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

राजयोग से संबंध बन गये स्नेहपूर्ण

ब्रह्माकुमार विजय सिंह कास्वे, डूँगरी, मुम्बई मंडल (पश्चिम रेलवे)

मैं मूल रूप से हिमाचल प्रदेश का रहने वाला हूँ। बचपन से ही माँ के आध्यात्मिक संस्कारों के कारण इस ओर मेरा झुकाव था एवं मैं नियमित रूप से पूजा-पाठ करता था।

मिला ईश्वरीय निमन्त्रण

जनवरी, 2011 में डूँगरी (गुजरात) में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय की ओर से 'अलविदा तनाव शिविर' का आयोजन किया गया। ब्रह्माकुमारी बहनें हमारी रेलवे कॉलोनी में शिविर के लिए ईश्वरीय निमन्त्रण देने आईं। संयोगवश उस समय मैं ड्यूटी पर था। घर आया तो पत्नी ने बताया कि सफेद साड़ी वाली बहनें आई थीं और निमन्त्रण-पत्र देकर गई हैं। उससे पहले मैंने इस विश्व विद्यालय का नाम कभी नहीं सुना था। आध्यात्मिकता की ओर झुकाव होने के कारण सोचा कि घर पर आकर ईश्वरीय निमन्त्रण दिया है तो शिविर में जाकर देखा तो जाए कि यह कैसा विश्व विद्यालय है, फिर शिविर की कोई फीस भी नहीं है, इसलिए मैंने जाने का निर्णय ले लिया। यह निर्णय मेरे जीवन की दिशा को परिवर्तित कर देगा, यह मैने कभी नहीं सोचा था।

बाबा ने दिए सभी प्रश्नों के उत्तर

शिविर के माध्यम से मुझे जिस सहजता एवं सरलता से आत्मा, परमात्मा एवं सृष्टि ड्रामा का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक परिचय प्राप्त हुआ उसने मेरे जीवन की दिशा ही परिवर्तित कर दी। मैंने भौतिक शास्त्र में स्नातकोत्तर (M.Sc.) किया है इसलिए सुनी गई बातों की प्रायोगिक जाँच करना मेरा स्वभाव है। शिविर के बाद ब्र.कु.बहनों एवं ईश्वरीय परिवार के स्नेहपूर्ण व्यवहार एवं सहयोग के कारण मैंने सेवाकेन्द्र पर जाकर नियमित मुरली क्लास शुरू की एवं राजयोग का अभ्यास भी शुरू किया। शुरू-शुरू में जब मैं मुरली सुनता तो मेरे मन में अनगिनत प्रश्नों का तूफान-सा आता लेकिन एक दिन मुरली में बाबा ने कहा, ''बच्चे, प्रश्नचित्त कभी प्रसन्न नहीं रह सकता, अगर मन में कोई प्रश्न आए तो संशय में मत आना। प्रश्न को वहीं छोड़ देना, सही समय आने पर बाबा तुम्हारे हरेक प्रश्न का उत्तर स्वयं देगा।'' यह बात मेरे दिल में बैठ गई और एक-एक कर बाबा ने मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर देकर मुझे 'प्रश्नचित्त' से 'प्रसन्नचित्त' बना दिया।

समस्या से निपटने का मन्त्र

ज्ञान में आने से पहले मेरे जीवन में छोटी-सी भी समस्या आती थी तो मैं बेचैन हो जाता था। मेरी भूख-प्यास और नींद गायब हो जाती थी। ज्ञान लेने के बाद एक दिन मैंने मन ही मन बाबा से बात की, बाबा, अगर कोई समस्या आए तो उससे निपटने का कुछ मंत्र बताइये। पाँच दिन बाद ही बाबा ने अव्यक्त मुरली के माध्यम से कहा, 'बच्चे, जब भी कोई पेपर आए तो कहना, मेरा बाबा, आ जाओ, मदद करो, तो बाबा भी मदद के लिए बंधा हुआ है' इस बात को मैंने मंत्र की तरह अपने जीवन में धारण कर लिया। जब भी कोई समस्या आती है तो मुझे बाबा का जवाब मिल जाता है, ''लाडले बच्चे, चिंता मत करो, मैं बैठा हूँ ना।''

स्नेहपूर्ण और सहयोगपूर्ण सम्बन्ध

ईश्वरीय ज्ञान-योग के आधार से मुझे अनगिनत लौकिक व अलौकिक अनुभव हुए हैं। ईश्वरीय ज्ञान के इन 5 वर्षों में मुझे तीन बार उत्कृष्ट सेवा के लिए अवार्ड मिला जबकि एक रेलकर्मी को अपने पूरे सेवाकाल में एक बार भी अवार्ड मिलना बहुत गर्व की बात होती है। अभी रेलवे की सेवा में मुझे केवल 11 वर्ष ही हुए हैं। ज्ञान में आने से पूर्व मेरा स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा था। मैं छोटी-सी बात पर क्रोधित हो जाता था जिसके कारण घर में और ड्यूटी पर भी सहकर्मियों के साथ मेरे सम्बन्ध तनावपूर्ण रहते थे।

ज्ञान में आने के बाद मैंने जाना कि शान्ति और प्रेम मुझ आत्मा का स्वधर्म है। इससे मैंने अपने आप में धीरे-धीरे परिवर्तन करना प्रारम्भ किया, परिणामस्वरूप आज घर में शान्ति है एवं सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध स्नेहपूर्ण एवं सहयोगपूर्ण हैं।

प्रसन्न रहता हूँ और प्रसन्न रखता हूँ

मैंने बाबा की ''स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन'' की बात को अपने जीवन में आत्मसात किया, परिणामस्वरूप सहकर्मियों ने भी मुरली क्लास एवं राजयोग का अभ्यास प्रारंभ किया। आज मैं मुरली की गुह्य से गुह्य बातों का सरलता से मंथन करता हूँ, हमेशा प्रसन्न रहता हूँ और सबको प्रसन्न रखने का पुरुषार्थ करता हूँ। मैं सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने कदम-कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया एवं मुझे बाबा का बालक बनाया। उनके मार्गदर्शन से ही, बाबा के ज्ञान को धारण कर वेस्ट से बेस्ट बनने के लक्ष्य की ओर मैं कदम बढ़ा रहा हूँ। ❖

आप जीओ हजारों साल

ब्रह्माकुमारी नरेन्द्र कौर छाबड़ा, औरंगाबाद

अपने अतीत की दुखद स्मृतियों को याद करना, कड़वाहट भरी घटनाओं को बार-बार सबको सुनाना, रिश्तों के खोखलेपन तथा उनमें पड़ी दरारों का स्मरण कर तनाव में रहना, भीतर ही भीतर कुढ़ते रहना और सम्बन्धियों को कोसते रहना – अधिकांश मनुष्यों का स्वभाव-संस्कार बन गया है। इन बातों से केवल अशान्ति बढ़ती है, नकारात्मक सोच और अधिक हावी हो जाती है, हासिल कुछ भी नहीं होता।

बाबा ने हमें समझाया है, जिस प्रकार बासी भोजन खाने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है वैसे ही बासी (पुरानी) बातों को बार-बार याद करने से तन-मन अस्वस्थ होते हैं। जैसे भूत केवल डर व नकारात्मकता का प्रतीक है उसी प्रकार पुरानी, बीती बातें केवल दुख, क्लेश, तनाव तथा नकारात्मक सोच ही पैदा करती हैं इसलिए अतीत को भूतकाल भी कहा जाता है।

परम आदरणीया दादी जानकी जी के जीवन की एक घटना शिवानी बहन ने अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़ कार्यक्रम में सुनाई थी, जो कि बेहद प्रेरणादायक है। उन्होंने बताया कि एक बार वे दादी जानकी जी से मिलने आबू पर्वत गयीं। पता लगा, उस दिन दादी जी की तबीयत ठीक नहीं थी अत: वे दूसरे दिन उन्हें मिलने के लिए पहुँची। सहज भाव से ही उन्होंने पूछा, 'दादी जी, अब आपकी तबीयत कैसी है?'

दादी जी मुसकराकर बोली, 'मैं बिल्कुल ठीक हूँ।' बहन ने कहा, 'कल आपकी तबीयत ठीक नहीं थी न!' दादी जी फौरन बोली, 'वो कल था, वो तो बीत गया, अब उसे क्यों याद करें! आज मैं एकदम ठीक हूँ।' कितनी सकारात्मक सोच है दादी जी की। कल क्या, वे तो कुछ देर पहले हुई बात को भी बीती बात कहकर वर्तमान अर्थात् अब में जीती हैं। आज सौ वर्ष की उम्र में भी उनके भीतर जो ऊर्जा, उत्साह, लगन और सकारात्मकता है शायद इसी कारण है। जो संकल्प वे करती हैं वे अवश्य पूरे होते हैं। वे कहती भी हैं, 'बाबा साथ है तो काम हुआ पड़ा है।' कहीं कोई संदेह, संशय नहीं, कोई अनुमान नहीं, केवल दृढ़ निश्चय है, कितनी ऊँची अवस्था है यह!

नख से शिख तक ज्ञान, प्रेम, पवित्रता, शान्ति व सकारात्मकता से भरपूर दादी जी अपने आभामंडल द्वारा विश्व भर में शान्ति, प्रेम, पवित्रता व सकारात्मकता के वायब्रेशन पहुँचा रही हैं। उनके शताब्दी वर्ष की ढेरों बधाइयाँ तथा हार्दिक शुभकामनाएँ। दादी जी चिरायु हों, उनके द्वारा विश्व की आत्माओं को सुख, शान्ति, प्रेम के प्रकम्पनों की प्राप्ति होती रहे, सबका कल्याण होता रहे, प्यारी दादी जी के प्रति यही शुभकामनाएँ हैं। ❖

यदि कोई व्यक्ति आपको गुस्सा दिलाने में सफल होता है तो यकीनन आप उसके हाथ की कठपुतली हैं

मुझे ईश्वर जैसा सच्चा बनना है

पिछड़ी जाति राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति ईश्वरैय्या, हैदराबाद

हैदराबाद से 65 किलोमीटर दूर मूसी नदी के किनारे, 25 घरों के एक छोटे-से गाँव में मेरा जन्म हुआ। उस समय वहाँ बिजली, पानी, सड़क, स्कूल आदि कोई भी सुविधा नहीं थी। वहाँ से चार किलोमीटर दूर एक गाँव में प्रतिदिन पैदल जाकर मैंने तीसरी कक्षा तक पढ़ाई की। हम चार बच्चे जाते थे। चौथी कक्षा में मैंने और मेरे बड़े भाई ने वहीं पर पाँच रुपये महीने से किराए के एक मकान में रहना शुरू किया। हमारे साथ 10 बच्चे और भी जुड़ गए, हमने एक कुक को भी रख लिया। पिताजी 15 किलो चावल व सबसे बड़े भाई 5 रुपये प्रति महीना देते थे।

विद्यार्थी काल से ही गम्भीर रहा कर्त्तव्यों के प्रति

कुछ समय के बाद सरकार ने हमारे उस स्थान को सोशल वेलफेयर होस्टल में परिवर्तित कर दिया और उसका खर्चा उठाना शुरू कर दिया। होस्टल में बिजली का प्रबन्ध नहीं था इसलिए हम या तो स्ट्रीट लाइट में पढ़ते थे या रात को स्कूल के कमरे में जाकर पढ़ते थे क्योंकि वहाँ बिजली का प्रबन्ध था, वहीं कमरे में रात को सो जाते थे, हमें ऐसी स्वीकृति मिल गई थी। दसवीं तक यूँ ही चलता रहा। हिन्दी, अंग्रेजी और तेलगू भाषा में मेरी पढ़ाई हुई। इसके बाद घर से 8 किलोमीटर दूरी पर दूसरे गाँव में कमरा किराए पर लेकर एक दूसरे साथी के साथ इंटरमीडियट (11,12) की पढ़ाई पूरी की और बाद में हैदराबाद आया। वहाँ भी कमरा किराए पर लेकर बी.एस.सी. की, तब बड़े भाई हर महीने 50 रुपये देते थे। जब बी.एस.सी.फाइनल में था तब शादी हो गई और मुझे बहुत धनवान घर की युगल मिली मानो श्री लक्ष्मी ही आ गई। बाल्यकाल से वो कभी पैदल नहीं चली, गाड़ी में ही आई-गई। उनका कोई भाई नहीं है। शादी के बाद मैं ससुर के घर में सिकंदराबाद में ही रहने लगा। उन्होंने ही मुझे हैदराबाद की ओसमानिया यूनिवर्सिटी से लॉ कराया और लॉ पास होने के बाद हैदराबाद में प्रैक्टिस शुरू की। विद्यार्थी जीवन से ही मैं अपने कर्त्तव्य के प्रति बड़ा गम्भीर रहा। व्यर्थ वार्तालाप करना, सिनेमा जाना, होटल जाना आदि कोई आदत मुझमें नहीं थी। इस कारण से मेरी प्रैक्टिस बहुत अच्छी चली, मुझे बहुत मामले मिलने लगे। प्रैक्टिस इतनी अच्छी चली कि मैंने कभी फीस की गिनती भी नहीं की, सब अपनी युगल को दे देता था, उन्होंने भी कभी गिनती नहीं की। सन् 1978 में वकील बनने के बाद 22 साल तक वकालत की जिनमें 5 साल सरकारी वकील रहा और 1999 में आंध्रप्रदेश के उच्च-न्यायालय का न्यायाधीश बना दिया गया।

न्यायाधीश मेरे व्यवहार से बहुत खुश थे

मैं वकील के रूप में बहुत मशहूर हो गया था। न्यायाधीशगण मेरे व्यवहार में नम्रता तथा सद्गुणों को देखते थे। कानून की मुझे अच्छी जानकारी थी। जब मैं अपने केस को न्यायाधीश के सामने रखता था तो उन्हें मेरा व्यवहार बहुत पसंद आता था। कुल मिलाकर वो मेरे से बहुत खुश थे। उन सबका मेरे लिए बहुत स्नेह, सम्मान, सहयोग था। सन् 1999 में मुझे न्यायाधीश बनाया गया, तब तक मैं ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में कुछ नहीं जानता था। मेरे दो वरिष्ठ न्यायाधीश 3 मई, 1999 को ब्रह्माकुमारीज़ के निमंत्रण पर आबू पर्वत गए। वे दोनों मेरे दोस्त थे, मुझे भी अपने साथ ले जाना चाहते थे लेकिन मुझे 17 मई, 1999 को न्यायाधीश के रूप में शपथ ग्रहण करनी थी इसलिए नहीं जा सका।

ज्ञान-सरोवर में मिला ईश्वरीय ज्ञान

शपथ ग्रहण के कार्य के पूर्ण होने के (3 दिन) बाद उन दोनों न्यायाधीश मित्रों ने मुझे आबू पर्वत बुलाया। एक का इलाज ग्लोबल हॉस्पिटल में चल रहा था और ज्ञान सरोवर में दोनों का साप्ताहिक पाठ्यक्रम (ज्ञान का कोर्स) चल रहा था। मैं भी उनके साथ ज्ञान का कोर्स करने लगा। उन दोनों को ज्ञान समझ में नहीं आया लेकिन मुझे ईश्वरीय अनुभूति होने लगी। आत्मा के बारे में थोड़ा-बहुत पहले भी जानता था परंतु वहाँ आत्मा और परमात्मा की स्पष्ट समझ मिली। कोर्स के दौरान बताया गया कि देवता सात्विक भोजन खाते हैं, मैंने पक्का निर्णय किया कि मैं सात्विक भोजन ही खाऊँगा। वहाँ से वापस आकर सिकंदराबाद सेवाकेन्द्र पर ज्ञान का पुनः कोर्स किया, 6 साल तक सप्ताह में दो दिन मैं वहाँ ईश्वरीय क्लास में जाता रहा। फिर मुझे 3 एकड़ का सरकारी बंगला हैदराबाद में मिल गया और मैं बंजारा हिल सेवाकेन्द्र पर नियमित क्लास करने लगा। मुझे जो सरकारी मकान मिला उसमें मैंने बाबा का कमरा बनाया। इसके बाद अगले 8 सालों में एक दिन भी मुरली (बाबा के महावाक्य) मिस नहीं की।

चार बार पढ़ता था मुरली

मैं सुबह मुरली पढ़ता था, फिर कोर्ट जाने से पहले पढ़ता था, कोर्ट से आने के बाद पढ़ता था और रात को सोने से पहले भी पढ़ता था। इस प्रकार चार बार मुरली पढ़ लेता था। जज बनने के बाद जो शपथ मैंने ग्रहण की उसे पूरा करने में मुरली ने बहुत मदद की। मेरे दोस्त या मेरी युगल के जान-पहचान वाले यदि कभी किसी मामले में पक्ष लेने की बात कहते थे तो मैं स्वीकार नहीं करता था। ईश्वरीय ज्ञान लेने के बाद मैंने दृढ़ संकल्प किया कि मुझे भी ईश्वर जैसा सच्चा बनना है, सच्चाई में ही पवित्रता है, तभी न्यायकारी बनेंगे। न्याय देना भगवान का कार्य है। अगर मैं कुछ गलत फैसला करूँगा तो आत्मा मैली हो जाएगी इसलिए मुझे किसी भी लालच में आकर गलत कर्म नहीं करना है। एक बार ऐसा हुआ कि मुख्यमंत्री को किसी कार्य से बहुत फायदा होने वाला था और 7 जजों की पीठ को इसका निर्णय करना था। अगर ये फैसला उनके हक में हो जाता था तो उन्हें बहुत वोट मिलने वाले थे, चुनाव नजदीक थे। तीन जजों को उन्होंने अपने पक्ष में कर लिया, फिर एक व्यक्ति को मेरे पास भेजा और मुझे कहा गया कि आप भी मुख्यमंत्री का पक्ष लो तो जो चाहिए वो मिलेगा। मैंने यह बात मुख्य न्यायाधीश को बताई और कहा, मैं अंतरात्मा के आधार से फैसला करूँगा। मुख्य न्यायाधीश ने मुझे 'हाँ' कहा और मैंने हर प्रकार के लालच से खुद को बचा लिया।

ईश्वरीय बल ने बचाया लालच से

इसी प्रकार, वक्फ बोर्ड की एक जमीन को सरकार ने किसी प्राइवेट व्यक्ति को बेच दिया था। मेरे पास यह केस फाइल किया गया कि यह वक्फ बोर्ड की सम्पत्ति है, सरकार की नहीं। सरकार ने कहा, यह वक्फ की नहीं, हमारी है। जिस व्यक्ति को बेची गई उसने उस पर बड़ी इमारतें बनानी शुरू कर दीं। तब मैंने उस पर स्टे ऑर्डर दे दिया। इसके बाद मेरे पास सरकार के एक करीबी व्यक्ति को भेजा गया और कहा गया कि आप स्टे ऑर्डर नहीं दो, इससे विकास का कार्य रुक जायेगा। मैंने कहा, मेरे पास पूरा प्रमाण है कि ये वक्फ सम्पत्ति है। अगर सरकार इसे खरीद ले, 100 करोड़ रुपये वक्फ बोर्ड को दे दे तो जो चाहे निर्माण कर सकती है। मेरे इस निर्णय के विरुद्ध मुख्य न्यायाधीश के पास अपील गई और उस पर दबाव डाला गया, लालच दिया गया कि आपको सुप्रीम कोर्ट का जज बना देंगे, आप स्टे हटा दो। वैसे तो वे बहुत नैतिकता की बातें करते थे, पर लालच में आ गये और मेरे द्वारा दिए गए स्टे ऑर्डर को निरस्त कर दिया। उन मुख्य न्यायाधीश के ससुर ने एक बार मेरी सच्चाई और ईमानदारी की यह कहकर हंसी उड़ाई कि 'तुम क्या जज बने हुए हो, मेरे दामाद को देखो सुप्रीम कोर्ट पहुँच गए।' मैंने यह बात इसलिए बताई कि जब तक ईश्वर पिता का बल ना हो तब

तक हम नैतिक नहीं रह सकते। मेरे पास ईश्वरीय बल था तो मैं बच गया।

टेबल पर हमेशा शिव बाबा का स्टीकर रहता था

ऐसी कई प्रकार की घटनाएँ घटीं जिनमें मुझे लालच दिये जाते थे, दबाव डाले जाते थे लेकिन मैं सुरक्षित रहा। समाज में रहते हुए हमें अपनी इमेज बनानी पड़ती है कि ये किसी के दबाव में नहीं आते। मैंने यह इमेज बनाई। सब जानते हैं कि मैंने कभी किसी का पक्ष-विपक्ष ना लेते हुए सच्चाई से फैसले किए इसलिए मुझे कभी तनाव नहीं हुआ। मैं 14 साल जज रहा, 69000 केस सुलझाए। जैसे सुबह कोर्ट में प्रफुल्लित, हर्षित जाता था वैसे ही लौटता था। कई बार तो ऐसे वकीलों से पाला पड़ता था जो झूठ को सच और सच को झूठ बनाने की कोशिश करते थे लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ से प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग से प्राप्त सुनने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति के आधार पर इस प्रकार की बातों से कभी प्रभावित नहीं होता था। कोर्ट के हॉल के मेरे टेबल पर हमेशा बाबा का स्टीकर रहता था। जब वकील बहस करते थे तो भी मैं बाबा को देखता था, कहता था, मैं तो केवल माध्यम हूँ, न्यायकारी आप हैं, न्याय आपको करना है। मैं निष्पक्ष होकर बैठता था। बाबा की याद व मेरे निमित्त-भाव के कारण वातावरण शांत बन जाता था। कभी भी तनावपूर्ण, क्रोधपूर्ण वातावरण बना ही नहीं। इसी कारण वकील भी कभी गुस्सा होकर नहीं जाते थे चाहे केस हार जाते थे। मेरे चेम्बर में भी बाबा का फोटो था।

सम्मान समारोह द्वारा हुई बाबा की सेवा

मेरी युगल मुझे कहा करती थी, आप रिश्तेदारों, मित्रों और बड़े जजों की भी नहीं सुनते हो, सेवानिवृत्ति के बाद आपको कोई भी जॉब नहीं मिलेगा। मैं कहता था, मुझे देने वाला परमात्मा है और मुझे कुछ भी नहीं मिलेगा तो भी मैं खुश हूँ। हाईकोर्ट के जज के रूप में सेवा करने के बाद, एक्टिंग चीफ जस्टिस के रूप में सेवानिवृत्त हो गया। सेवानिवृत्ति के बाद मुझे एक नहीं, दो-दो ऑफर आए, जो मुझे बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने दिये। मुझे बहुत खुशी भी हुई इसलिए कि सेवा के दौरान कोई भी गलत काम नहीं किया। सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में मेरा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मैंने सोचा, इस समारोह के द्वारा भी बाबा की सेवा होनी चाहिए इसलिए मेरा चीफ जस्टिस और एक सुप्रीम कोर्ट का जज, हम तीनों शान्ति सरोवर के ऑडिटोरियम में आए और हजारों की सभा में मेरा सम्मान किया गया। मधुबन से सुदेश बहन तथा वरिष्ठ भ्राता बृजमोहन जी यहाँ आए। मुझे बहुत खुशी हुई कि सेवानिवृत्ति के बाद भी इतना सम्मान! बाबा ने कितना मूल्यवान बना दिया! बाबा के बच्चों की बुजुर्ग होने के बाद भी कितनी वैल्यू है!

सोशल जस्टिस तथा एम्पावरमेंट मिनिस्ट्री के तहत नेशनल कमिशन फॉर बैकवर्ड क्लासेस के चेयरमैन के रूप में मैं अभी दिल्ली में सेवारत हूँ। मेरा यह पद केन्द्रीय मंत्री के समान है। यहाँ मुझे टाइप-8 बंगला दिया गया है। उसी में ईश्वरीय ज्ञान की पाठशाला भी खोली है। यहाँ भी मैं प्रातः मुरली क्लास के लिए नियमित रूप से पाण्डव भवन (करोल बाग) जाता हूँ। भारत के जिस भी कोने में जाने का मौका मिलता है वहाँ की निमित्त ब्रह्माकुमारी बहनों को अपने आने का संदेश दे देता हूँ और जो भी ईश्वरीय सेवा मुझसे हो सके करता हूँ। बाबा ने सेवाक्षेत्र को विस्तारित करते हुए भाग्य बनाने के मेरे अवसरों को बढ़ा दिया है। बाबा का बहुत-बहुत शुक्रिया! ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 4 का शेष...

त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ बना रहे हैं। त्रिमूर्ति शिव से ज्ञान प्रकाश प्राप्त कर राजयोगी पूनम के चन्द्र-सम सोलह कला सम्पूर्ण बन रहा है। ज्ञान सूर्य के उदित होने से अन्धकार विलीन होता जा रहा है और चारों ओर सुख, शान्ति प्रवाहित हो रही है। यही है शिव-रात्रि, शुभ-रात्रि जिसकी स्मृति आज लोग यही कह कर ताजा करते हैं – 'शिव के भण्डारे भरपूर, सब काल कंटक दूर।' ❖

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुज़फ्फ़रनगर

व्यक्ति धन के पीछे तब तक भागता है, जब तक उसका निधन नहीं हो जाता। निधन का सांसारिक या सामाजिक अर्थ है शरीरवासी का अपने आवास (शरीर) को छोड़कर किसी अनजान यात्रा पर निकल पड़ना। इसे समाज में स्वर्गवासी होना भी कहा जाता है अर्थात् जब तक वह शरीरवासी था, तब तक वह नर्कवासी था परन्तु निधन का आध्यात्मिक अर्थ है धन गंवा बैठना। आत्मा जब शरीर व शरीर के सर्व पदार्थों को छोड़ कर शरीर से प्रस्थान करती है तो दो सूक्ष्म चीज़ें उसके साथ जाती हैं। उसके कर्म के प्रभाव (पाप या प्रालब्ध) और उसके संस्कार (अच्छी-बुरी आदतें या गुण-अवगुण)। उसके कर्म व संस्कार उसके अगले जन्म के देश, परिवार व वातावरण का निर्धारण ही नहीं करते बल्कि उसकी प्रवृत्ति का निर्माण भी करते हैं। फिर जैसी प्रवृत्ति होती है, वैसी ही अगले जन्म में प्रकृति (शरीर) प्राप्त होती है। शास्त्रों में एक श्लोक आता है, योग्यं योग्येन युज्यते अर्थात् एक विशेष प्रवृत्ति वाली आत्मा उसी स्थान व परिवार में जन्म लेती है, जो उस प्रवृत्ति को प्रकट करने के लिए सबसे उपयुक्त आधार हो जैसे कि एक दानी व पूजा-पाठी व्यक्ति मृत्यु के बाद ऐसे घर-परिवार में जन्म पाता है जो उसके पिछले जन्म के दान-पुण्य व पूजा-पाठ को उसी स्तर से आगे बढ़ाने में मदद करे। उसे किसी धर्मभीरू धनी की औलाद के रूप में जन्म मिलता है अर्थात् एक जन्म का दान दूसरे जन्म में ब्याज समेत प्राप्त होता है। उसी प्रकार एक शराबी व्यक्ति मृत्योपरान्त ऐसे परिवार में जन्म पाता है जहां शराब पीने-पिलाने का चलन हो।

सीमित धन, असीमित उपयोग - असीमित धन, सीमित उपयोग

धन की चार मुख्य गतियां हैं, दान देना, उपयोग करना, उपभोग करना व नष्ट होना। धन की श्रेष्ठतम गति है गुप्त-दान, न कि अपने को दानी दिखाने के लिए दान। आज के कुछ गुरु गुप्त रूप से कान में नामदान करते हैं परन्तु परमसद्गुरु शिव तो मनमनाभव और मध्याजी भव के मंत्र खुल कर दान करते हैं। वे भी गुप्त दानी हैं क्योंकि ब्रह्मा से दान कराते हैं। मनुष्य अपने दान को जगज़ाहिर करता है परन्तु परमपिता शिव पूरे जग को दान करते हैं खुद को ज़ाहिर किये बिना। स्थूल दान गुप्त हो और सूक्ष्म मंत्रों व गुणों का दान खुल कर हो, ये दान के श्रेष्ठ रूप हैं। कन्यादान भी स्थूल-दान है परन्तु ऐसा कहना भी कन्याओं की ग्लानि करना है। एक तरफ तो कुंवारी कन्या को देवी के समान माना जाता है और दूसरी तरफ उस कन्या का दान करते हैं, जो कि एक प्रकार से देवी को घर से निकालना हुआ। फिर वे यह कामना क्यों करते हैं कि लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवियों का हमारे घर में वास हो? दान तो दहेज के लोभी जबरन लेते हैं और ऐसे दहेज का दान तो कन्या की बदौलत मिलता है, फिर वह दात्रीकन्या दान की वस्तु कैसे हो गई? दहेज मांगने वाले से बड़ा भिखारी कोई और नहीं। दान के बारे में याद रहे, ''खाया पिया अंग लगेगा, दान किया संग चलेगा बाकी बचा जंग लगेगा।'' धन की दूसरी गति उपयोग करना भी श्रेष्ठ है परन्तु इसके दो रूप हैं। जनसाधारण के द्वारा अपने 'सीमित धन का असीमित उपयोग' कर इसे पूरी गति दी जाती है और किसी धनवान के द्वारा अपने असीमित धन का सीमित उपयोग कर इसे व खुद को अधोगति दी जाती है अर्थात् जो धन ज़रूरतमंदों के कल्याण में लग सकता है, उसे जड़ करना भी एक विकर्म है। धन की तीसरी गति काले धन का असीमित उपभोग अर्थात् इन्द्रियों के सुख लेने का है। इससे विकर्म होते हैं, जो कि भविष्य में दुर्गति

कराते हैं। जो धन लोलुपता वश इकट्ठा किया जाता है वह पहले अपने जायज़ या नाजायज़ मालिक के चरित्र को नष्ट करता है, फिर भाग्य को नष्ट करता है और फिर उसके शरीर के नष्ट होते ही बिखर कर नष्ट हो जाता है, जो कि धन की चौथी गति है।

चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे धन (कुबेर) की

क्राइस्ट के पास निकोडोमस नाम का एक बेहद धनी व्यक्ति आया और उसने पूछा कि मेरे जीवन में क्रांति कैसे आए, मैं ईश्वर को कैसे प्राप्त करूं? क्राइस्ट ने उसे मूसा के द्वारा बताए गए दस नियमों का पालन करने को कहा। निकोडोमस ने कहा कि इन दस आज्ञाओं का तो मैं पहले से ही पालन करता हूँ। मैं पर-नारी को बुरी नजर से नहीं देखता, मैं चोरी नहीं करता, नित्य ईश्वर की प्रार्थना करता हूँ, मैं पक्का धार्मिक हूँ लेकिन मेरे जीवन में अभी तक कोई क्रांति नहीं हुई है। क्राइस्ट ने कहा कि तुम अपनी सारी दौलत दान कर दो और फिर मेरे पीछे चलो तब तुम्हारे जीवन में क्रांति आएगी। निकोडोमस ने आग्रह किया कि आप इतने कठोर मत बनो, मुझे तो धन से अभी बहुत काम निपटाने हैं। इस पर क्राइस्ट ने अपने शिष्यों की तरफ देखा और कहा, ''सूई के छेद से ऊंट निकल सकता है लेकिन कोई धनी व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' शायद इसी वृत्तान्त के कारण बाइबिल में लिखा है, ''कोई व्यक्ति एक साथ दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है, चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे धन (कुबेर) की।'' धनी सारे कर्मकाण्डों का पालन कर सकता है परन्तु अपने सारे अतिरिक्त धन का त्याग नहीं कर सकता। वह तो चर्च या मन्दिर बनवा कर वहां की व्यवस्था के लिए नौकर व पुजारी रख सकता है और अपने पक्ष में पूजा करवा सकता है, दान दे सकता है परन्तु सम्पूर्ण त्याग नहीं कर सकता। मनुष्य भूल गया है कि दूसरे द्वारा की गई पूजा उस दूसरे का कर्म है, जो केवल उसी के काम आयेगा, करवाने वाले के काम नहीं।

कंजूस सबसे बड़ा दानी

दुनिया कहती है कि कंजूस कभी दान नहीं करता परन्तु देखा जाए तो कंजूस सबसे बड़ा दानी होता है। वह अपने ऊपर नाममात्र को खर्च करता है और जब मरता है तो सारा धन उसके बच्चों व परिजनों को दान में मिल जाता है। कंजूस धन को ज़मीन में भी गाड़ कर रखता है। जब कंजूस मर कर ज़मीन में गड़ जाता है, तब उसका गड़ा धन बाहर आ जाता है। देखा जाए तो कंजूस व उसका धन, दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं। कंजूस धन को कैद में रखना चाहता है और कैद का धन कंजूस को तृष्णा रूपी सूक्ष्म पिंजरे में कैद रखता है। अक्सर कंजूस को भिखारी कह दिया जाता है क्योंकि वह भिखारियों की तरह पैसे की कामना करता रहता है। देखा गया है कि भिखारी काफी धन बचा कर छिपाता रहता है। उसके मरने के बाद जब उसके स्थान की सफाई की जाती है तो काफी धन उसके सामानों में या ज़मीन में दबा हुआ मिलता है। कंजूस हो या भिखारी, उनकी धन के प्रति आसक्ति मृत्यु को कष्टदायी बना देती है। एक बूढ़े कंजूस बाप के पुत्र तो चार थे परन्तु उसे विश्वास किसी पर नहीं था। कंजूस पैसे के मामले में किसी पर विश्वास नहीं किया करते। बाप सख्त बीमार था परन्तु उसे मौत नहीं आती थी। बेटे उसकी सेवा करते-करते थक गये और मन ही मन प्रार्थना करते थे कि या तो बाप ठीक हो जाये या मर जाये परन्तु मृत्यु आ कर भी लौट जाती थी। परिवार वालों ने यह समस्या एक संत को बतलाई। संत उनके घर पर आये और मरणासन्न बूढ़े के पास बैठ गए। संत ने देखा कि बूढ़ा सामने की रसोई में मिट्टी के चूल्हे की तरफ बीच-बीच में देखता है। संत ने परिवार वालों से कहा कि आप चूल्हे के नीचे खुदाई करो, वहां अवश्य ही धन होगा जिसमें बूढ़े के प्राण फंसे हुए हैं। खुदाई करने पर एक छोटी-सी पेटी मिली जिसमें बहुमूल्य जेवरात भरे थे। संत ने जब उस पेटी को बूढ़े की छाती पर रखा, तो बूढ़े ने दोनों हाथों से पेटी को जकड़ लिया और इसके साथ ही उसके प्राण निकल गये। **(क्रमश :)**

बाबा से मिले तीन प्रश्नों के उत्तर

ब्रह्माकुमार जितेन्द्र, तिनसुकिया (आसाम)

मेरा जन्म सन् 1988 में एक गरीब परिवार में हुआ। बचपन में तो भक्ति करता था परन्तु जब 15 साल का हुआ तो संगत खराब होने से खान-पान बिगड़ गया, दुखी रहने लगा और कभी-कभी मरने के ख्याल भी आने लगे।

तीन प्रश्न

इसके बाद एक गुरु किया, 'ओम् नम: शिवाय' मन्त्र जपने लगा, सत्संग करने लगा, इससे अगले 3 वर्षों में खान-पान शुद्ध हो गया और गलत संग भी छूट गया। सत्संग सुनते-सुनते मन में तीन प्रश्न बार-बार उठने लगे। पहला यह कि जनसामान्य और मेरा देहधारी गुरु कहते हैं कि भगवान ही भला और बुरा दोनों काम कराते हैं परन्तु मैं जब से भगवान से जुड़ा हूँ, मेरा तो अच्छा ही हुआ है और लौकिक माता-पिता भी बुरा काम नहीं कराते तो भगवान कैसे कराएंगे? दूसरा प्रश्न यह आने लगा कि लोग कहते हैं, भगवान सबमें है तो क्या गंद में रहने वाले कीड़े में भी है? गुरु जी से पूछा तो वे भी बोले, हाँ, सबमें भगवान है, पर मन नहीं मानता था। उनके डर से 'हाँ जी' बोल देता था क्योंकि उनका आज्ञाकारी शिष्य था। तीसरा प्रश्न यह था कि हमारे बिहार राज्य में कहते हैं, शादी किया हुआ पवित्र है, बिना शादी आधा, शादी किया हुआ पूरा है पर रामायण में लिखा है, वही इन्द्रियाँ (कान, आँख, मुख) पवित्र हैं जो भगवान की सेवा करें, तो कौन-सी बात सत्य है?

प्रदर्शनी समझी तो बहुत अच्छी लगी

पैसा कमाने के लिए बिहार से मेरा अरुणाचल प्रदेश में जाना हुआ। दुर्गापूजा के अवसर पर वहाँ ब्रह्माकुमारीज़ की प्रदर्शनी देखी। बोर्ड पर लिखा था, 'आपके लिए ईश्वरीय सन्देश, गीता-ज्ञानदाता भगवान शिव का अवतरण हो चुका है'। यह सन्देश पढ़कर मन में सोचने लगा, मैंने शिव को गुरु बनाया, शिव पुराण पढ़ता हूँ, रामायण और गीता भी पढ़ता हूँ, शिव से प्यार भी करता हूँ और यहाँ लिखा है कि शिव का अवतरण हो चुका है, अवतरण होता तो क्या मुझे पता न चलता? फिर सोचा, चलकर देख लेता हूँ। जब प्रदर्शनी देखी और चित्र समझे तो बहुत अच्छा लगा। मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता दिया गया। समय निकालकर आश्रम पर गया तो एक ब्रह्माकुमारी बहन ने स्नेह से प्रसाद खिलाया और 7 दिन का कोर्स करने को कहा। मैं गाँव से सब्जी बेचने आता था बाज़ार में। मैंने कहा, बहन जी, मेरे पास समय नहीं है, सारा दिन काम करना पड़ता है। बहन जी ने कहा, आप सप्ताह में जब दो दिन सब्जी बेचने बाजार में आते हो तब कोर्स करना।

भगवान ही मिल गए तो बाकी क्या रहा!

अगले दिन बाजार आया तो सब्जी जल्दी बिक गई। मुझे लगा, ज़रूर किसी शक्ति का प्रभाव है। उस दिन से कोर्स करना शुरू किया और मेरे तीनों प्रश्नों के उत्तर मिल गए। पहला यह कि भगवान कभी बुरा नहीं कराते, हमेशा अच्छा ही कराते हैं। दूसरा यह कि भगवान सबमें नहीं हैं, वे परमधाम में रहते हैं और तीसरा यह कि कुमार-कुमारी सबसे ज्यादा पवित्र होते हैं, कुमारी की पूजा होती है। इन प्रश्नों के साथ-साथ और कई प्रश्नों के उत्तर मिल गये तो मुझे बहुत खुशी हुई। जब भगवान ही मिल गये तो बाकी क्या रहा! कोर्स के बाद हर दिन समय मिलने लगा, जो कि पहले 7 दिन तो क्या 7 मिनट भी नहीं मिलता था। कोर्स के बाद रोज़ मुरली सुनने लगा। आश्रम से 6 किलो मीटर दूर रहता था, साइकिल से जाता था। ठीक क्लास के समय पर हर दिन बाबा बुला लेते थे।

ज्ञान में आने के बाद एक से एक परीक्षाएँ आईं लेकिन

बाबा के प्यार और साथ ने परीक्षाओं से पार कराया। ज्ञान में चलने के बाद एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। बाबा की कमाल है, रास्ते में कभी कोई परेशानी नहीं आई, यहाँ तक कि साइकिल भी कभी पंक्चर नहीं हुई। बाबा मुझे बहुत मदद करते हैं। मेरी साइकिल भी बाबा ही चलाते थे, ऐसा मेरा पक्का अनुभव है। कुछ समय बाद मैं तिनसुकिया से बिहार वापस आ गया, अब यहाँ ज्ञान-लाभ ले रहा हूँ।

जितना चाहा उससे पद्मगुणा मिला

ज्ञान में आने के बाद मेरा हर काम अच्छा हो गया, खेती, सब्जी सब पहले से अच्छे हो गये। बाबा को देखकर अब कुछ देखना बाकी नहीं है, बाबा को जानकर अब कुछ जानना बाकी नहीं है, बाबा का ज्ञान सुनकर अब और कुछ सुनना बाकी नहीं है, बाबा को पा कर अब और कुछ पाना बाकी नहीं है, बाबा के यज्ञ की सेवा करके अब और कुछ करना बाकी नहीं है इसलिए मेरा दिल कहता है कि पाना था सो पा लिया। बाबा को पा करके क्यों न मैं बाबा से पद्मगुणा प्यार करूँ! ज्ञान में आने के बाद मैं बाबा से और ईश्वरीय परिवार से सच्चाई से रहने लगा। बाबा को दिल के प्यार से याद करता हूँ। मैं जितना अपने लिए सोचता हूँ उससे सौ गुना ज्यादा बाबा मेरे लिए सोचते हैं, यह मेरा पक्का अनुभव है इसलिए मेरा दिल कहता है, जितना मैंने आपसे चाहा था बाबा, उससे पदमगुणा आपने मुझे दिया है। ऐसे बाबा को मैं क्यों प्यार न करूँ!

सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। बाबा मेरी बहुत प्यार से पालना करते हैं, हर प्रकार से देखरेख करते हैं, हर जगह आगे रखते हैं। मैं भाई-बहनों से यही कहना चाहता हूँ कि आप सिर्फ बाबा के साथ और बाबा के बच्चों के साथ सच्चाई-सफाई से रहिए। ❖

शिव जयन्ती - हीरे तुल्य त्यौहार

ब्र.कु. योगेश, बी.के.कॉलोनी, शान्तिवन

जो है अजन्मा, परम हितैषी, ज्योतिबिन्दु निराकारी,
सर्व गुणों और शक्तियों के सागर हैं परम हितकारी।
कलयुगी रात्रि में जिनका होता है दिव्य अवतरण,
अज्ञान निद्रा मिटाकर जो कराते सच्चा जागरण।
जिनके गुण-कर्त्तव्य-विशेषताएँ कितने ही मंगलकारक,
ऐसे परमपिता शिव के जन्मदिवस की कोटि-कोटि मुबारक।

अति सूक्ष्म, जगमग ज्योति, है रूप कितना अलौकिक,
अनुभवी ब्रह्मा तन का ले आधार, रचते दुनिया स्वर्गिक।
जीवन धन्य बनता उनका, जिन्होंने उनको पहचाना,
पतित दुनिया में ही आकर सुनाते दिव्य तराना।
सब पर समान स्नेह लुटाते, बनते सच्चे सहायक,
ऐसे परमपिता शिव के जन्मदिवस की कोटि-कोटि मुबारक।

हीरे तुल्य यह त्योहार बड़ा ही मनोहारी, मनभावन,
बाप-बच्चे संग मनाते, बरसता चहुँ ओर सुख सावन।
ज्ञान रूपी मक्खन से बन जाते हम मनुष्य से देवता,
सोने की चिड़िया बनता भारत, छा जाती दिव्यता।
ईश्वरीय ज्ञान द्वारा आओ बनायें जीवन श्रेष्ठ एवम् सार्थक।
ऐसे शिवालय रचता के जन्मदिवस की कोटि-कोटि मुबारक।

दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव....पृष्ठ 17 का शेष

केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री हरिभाई चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके माध्यम से दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव के अवसर पर उनके दीर्घायु व स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनायें प्रेषित की हैं। दादी के प्रति शुभ भावनाएँ व्यक्त करने वालों में जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री फारूख अब्दुल्ला, छत्तीसगढ़ के विपक्ष के नेता टी.एस.सिंहदेव, हाइट्रो ग्रुप, हैदराबाद के अध्यक्ष डॉ.वी.पार्थसारथी रेड्डी भी शामिल थे। इस अवसर पर दादी जानकी को पुण्य भूषण अवार्ड व पुनेरी पगड़ी भेंट करके सम्मानित किया गया। दोनों दादियों ने मिलकर केक काटा और विभिन्न महानुभावों ने शॉल व स्मृति-चिह्न भेंट करके उनका स्वागत किया। ❖

पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है

ब्रह्माकुमार सुरेश जांगड़ा, जीन्द

अंग्रेजी में कहावत है कि Beauty is only skin deep अर्थात् सुन्दरता केवल इस चमड़ी तक सीमित है। यह भी कहते हैं कि मन की सुन्दरता, तन की सुन्दरता से बढ़कर होती है लेकिन आज के युग का इन्सान खासकर युवावर्ग तन की सुन्दरता को महत्व देता है। महत्व ही नहीं देता बल्कि इसके पीछे विवेकहीन हो पड़ा है। वह जिसे प्यार की संज्ञा देता है, क्या वह प्यार है? असल में प्यार क्या है? क्यों इन्सान प्यार का बहाना करके वहशी रूप धारण करता जा रहा है? जिस्मानी प्यार के पीछे वह क्यों अपना सब कुछ नष्ट कर रहा है? क्यों इस झूठे प्यार के पीछे उसका चारित्रिक पतन हो गया है? जिसे वह प्यार कहता है दरअसल वह वासना है। प्यार तो आत्मिक होता है, उसमें कोई शर्त नहीं होती, कोई स्वार्थ नहीं होता लेकिन वासना ने आज सभी को अन्धा बना दिया है। हर व्यक्ति इसकी चपेट में है। कितने ही राजनीतिक व धार्मिक प्रभाव वाले लोग वासना के पीछे अपना साम्राज्य बर्बाद कर चुके हैं। जिस्मानी प्यार में तो दुख ही दुख है, धोखा है, छल-कपट है, तन का दुख है तो मनोस्थिति भी खराब होती है और धन की बर्बादी भी होती है। यदि प्यार में से वासना समाप्त हो जाये तो प्यार वरदानी रूप धारण कर लेता है। इतिहास गवाह है कि इस वासनात्मक प्यार ने कितने ही राजघरानों की राजाई छीन ली है, कितने ही बेकसूरों का खून बहाया है। इसलिए जहाँ प्यार में लेशमात्र भी वासना लिप्त है, वहाँ बर्बादी ही बर्बादी है और जहाँ सम्पूर्ण पवित्रता है, वहाँ सुख और शान्ति है। इसलिए ही पवित्रता को सुख और शान्ति की जननी कहा गया है।

शरीर का प्रेम अमर नहीं है

प्यार का सम्बन्ध आत्मा के साथ होता है, शरीर के साथ नहीं। आत्मिक प्यार में कोई असफल नहीं होता। युवक-युवतियाँ आत्मदाह नहीं करते, रेलगाड़ी के नीचे नहीं कटते, जहर पीकर जीवन-लीला समाप्त नहीं करते। यदि प्यार का सम्बन्ध रूह से होता तो जीवन में ईर्ष्या, द्वेष, धोखाधड़ी, वैर, लूट-खसोट आदि का नामोनिशान नहीं होता। प्यार का सम्बन्ध आत्मा से ना होकर शरीर के साथ होने के कारण यह शरीर के साथ ही खत्म भी हो जाता है। यह प्रेम, अमर प्रेम नहीं है। आज के नवयुवक व नवयुवतियाँ जिस झूठे प्यार के वशीभूत होकर अपनी जान दे देते हैं, वह सच्चा प्रेम नहीं होता। अपनी जान वे बदनामी के डर से या पकड़े जाने के डर से या फिर ऐसी गलती कर लेने के कारण दे देते हैं जिसे समाज स्वीकार नहीं करता। फिर उनके पास जान देने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाता। कलियुग में विपरीत लिंग (अपोजिट सैक्स) के साथ सच्चा प्यार हो ही नहीं सकता क्योंकि हमारी स्थिति आत्म अभिमानी ना होकर देह अभिमानी हो जाती है। इसी कारण प्रकृति भी तमोप्रधान हो चुकी है। यदि मनुष्य पवित्र है तो वनस्पति जगत व प्राणी जगत भी सतोप्रधान हो जाता है।

पवित्रता अर्थात् मन में भी गलत विचार न उठे

प्रश्न यह है कि पवित्रता क्या है? कई लोग तो तन की साफ-सफाई व खान-पान की शुद्धि को पवित्रता समझते हैं। कई मनुष्य कुमार जीवन को पवित्रता समझते हैं, कई ब्रह्मचर्य के पालन को पवित्रता समझते हैं। हमारे देश में बहुत सारे समाज सुधारकों, सन्तों, फकीरों व अनेक महापुरुषों ने ब्रह्मचर्य का पालन किया लेकिन क्या हम इन सभी के जीवन को सम्पूर्ण पवित्र जीवन कह सकते हैं? सम्पूर्ण पवित्र हम उसको कहेंगे जिसके मन में भी कोई गलत विचार पैदा ना होता हो, जिसकी दृष्टि निर्विकारी हो, जिसकी आँखें कभी धोखा ना देती हों। यह तभी सम्भव है जब स्वयं पतित पावन परमपिता शिव परमात्मा धरा पर अवतरित होकर सहज राजयोग सिखाते हैं और नर-नारी को आत्म अभिमानी बनाते हैं।

ज़रूरी है प्रकृति का सुख

अब प्रश्न उठता है कि सुख क्या है व शान्ति क्या है? आजकल तो जिसके पास अथाह धन, दौलत, गाड़ी, बंगला, कोठी, नौकर, चाकर हैं, वही अपने को सुखी समझता है। उसके लिए तो यही स्वर्ग है लेकिन क्या हम इसे सम्पूर्ण सुख कहेंगे? यदि हमारे पास मन का सुख, तन का सुख, धन का सुख और जन का सुख है, फिर भी कहीं न कहीं कमी है। इन चारों सुखों के साथ-साथ हमें प्रकृति का सुख भी चाहिए तभी हम सम्पूर्ण सुखी कहलाएंगे। समस्त मानव जाति को व प्रकृति को सतोप्रधान बनाना, यह मानव के वश की बात नहीं है। यह कमाल तो सिर्फ परमपिता परमात्मा कर सकते हैं। यदि हम सत्य परमपिता परमात्मा को जानकर पवित्र जीवन जीना शुरू कर दें तो सतोप्रधान दुनिया में हमारा भी हिस्सा हो जाएगा। पवित्रता के बिना स्वर्ग की कल्पना करना भी असम्भव है।

जरूरत है सही दिशा की

युवावर्ग किसी भी समाज में क्रान्ति तथा बदलाव लाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है। आज युवावर्ग अपनी संस्कृति को भूल भटकाव की स्थिति में है। अगर आज का युवा पवित्रता की शक्ति और महत्व को जान ले तो वह आने वाली सतयुगी दुनिया के निर्माण व स्थापना में योगदान दे सकता है। युवाओं के अन्दर जोश होता है सिर्फ उसे सही दिशा देने की ज़रूरत है। कहा गया है,

युवा हाथ ही इस वसुधा का शृंगार किया करते हैं,
इनके कन्धे ही राष्ट्र का गुरुभार उठाया करते हैं,
इनकी अंगडाइयों से जन्म लेती हैं क्रान्तियाँ और
इनकी हुंकारों को भी भूचाल कहा करते हैं।

अगर युवा वर्ग पवित्रता के प्रति सजग हो जाये तथा विश्व परिवर्तन के इस कार्य में बुराइयों का बलिदान कर दे तो वह दिन दूर नहीं, जब इस धरा पर चारों ओर देवताई राज्य स्थापित हो जायेगा और दुनिया सुख व शान्ति से भरपूर स्वर्ग कहलाएगी।

‘पत्र’ संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। इसका हर अंक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी तथा आत्मउन्नति का भण्डार होता है। दिसम्बर, 2015 का अंक भी प्रेरणादायी और संग्रहणीय रहा। संजय की कमल से ‘इन्द्रियजीत’ मन को छू गया। ‘प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के’ कॉलम बहुत ही रोचक होता है।

‘मानव जीवन में धन की उपयोगिता’ हमें धन के सदुपयोग की जानकारी प्रदान करता है। ‘कर्म सिद्धांत’ लेख अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देता है और बताता है, अच्छा कर्म कभी भी बेकार नहीं जाता है। ‘अच्छा करें, अच्छा पायें’, ‘निराशा हटाओ खुशी लाओ’ लेख अन्तर्मन को स्पर्श कर गये। इसके लिए ‘ज्ञानामृत’ का सम्पादकीय विभाग बधाई का पात्र है, जो हर माह इतना अच्छा साहित्य उपलब्ध करवाता है।

– गायत्री वर्मा, जोबट (म.प्र.)

नवम्बर, 2015 अंक में प्रकाशित ‘ईर्ष्या अभिमान की बेटी है’ बहुत ही अच्छा लगा। इसमें लिखा है कि ‘ईर्ष्या वह बीमारी है जो अन्य सद्गुणों को पनपने नहीं देती है, जो इससे बचकर रहता है वही जीवन को सफल बना सकता है।’

– बसन्तकुमार, बुढ़ार, (म.प्र.)

खुशखबरी

ज्ञानामृत पत्रिका के पुराने अंकों का अध्ययन करने के इच्छुक भाई-बहनों के लिए खुशखबरी है कि gyanamrit.bkinfo.in लिंक से जनवरी, 1980 से दिसम्बर, 1981 तक की पत्रिकाएँ नेट पर उपलब्ध हैं। इससे आगे के अंक भी धीरे-धीरे उपलब्ध किए जाते रहेंगे..

– सम्पादक

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1. उदयपुर- केन्द्रीय स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री भ्राता जे.पी. नड्डा का उदयपुर एयरपोर्ट पर स्वागत करते हुए ब्र.कु.प्रकाश भाई। **2. गडचिरोली-** गोंडवाना यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ.एन.वी.कल्याणकर को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.दीपक भाई। साथ में ब्र.कु.प्रकाश भाई। **3.पुणे-** एन.डी.टी.वी.के लोकप्रिय टॉक शो 'वॉक विद टॉक' के संचालनकर्त्ता पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार भ्राता शेखर गुप्ता को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.दीपक हरके। साथ में ब्र.कु.रूपा बहन तथा ब्र.कु.गीतिका बहन। **4. कोलकाता-** हाल ऑफ फेम इन पी.आर.अवार्ड ब्र.कु.अस्मिता बहन को प्रदान करते हुए रामकृष्ण मिशन के उपाध्यक्ष स्वामी जीतात्मानंद महाराज तथा अन्य। **5. सेनफ्रान्सिसको-** नवनिर्वाचित मेयर भ्राता एडविन ली का अभिनंदन करते हुए ब्र.कु.चन्दु बहन। **6. सिकंन्दराबाद (मराडपल्ली)-** भ्राता रामोजी राव को मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.सत्यनारायण भाईतथा ब्र.कु.बोस भाई। **7.उमरेड-** महाराष्ट्र शासन सामाजिक न्याय व विशेष सहायक विभाग की ओर से 'राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व्यसनमुक्ति सेवा पुरस्कार २०१५-२०१६',केन्द्रीय यातायात मंत्री भ्राता नितिन गडकरी के हाथों प्राप्त करने के बाद ब्र.कु.अशोक भाई, ब्र.कु.रेखा बहन तथा ब्र.कु.सचिन परब उनके साथ। **8. झुन्झुनू-** नवनिर्मित तपस्या भवन का उद्घाटन करते हुए जिलाधीश भ्राता सलविन्दर सिंह सोहटा, पुलिस अधीक्षक भ्राता सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.पूनम बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : March, 2016.

शान्तिवन (आबू रोड)-
राजयोगिनी दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव के निमित्त केक काटते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.मुन्नी बहन, गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता ओ.पी.कोहली, गोवा की राज्यपाल महामहिम बहन मृदुला सिन्हा, नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति भ्राता रामवरण यादव तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)-
राजयोगिनी दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में सम्बोधित करते हुए श्री 1008 श्रीशैल जगद्गुरु चन्ना सिद्धराम। मंचासीन हैं राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक भ्राता गुलाब कोठारी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी तथा आचार्य डॉ.लोकेश मुनि।

शान्तिवन (आबू रोड)-
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के सम्मान समारोह में झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मु, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य केक काटते हुए।

शान्तिवन (आबू रोड)-
'माइंड-बॉडी मेडिसिन' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता राजेन्द्र राठौर, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.शिवानी बहन तथा अन्य।